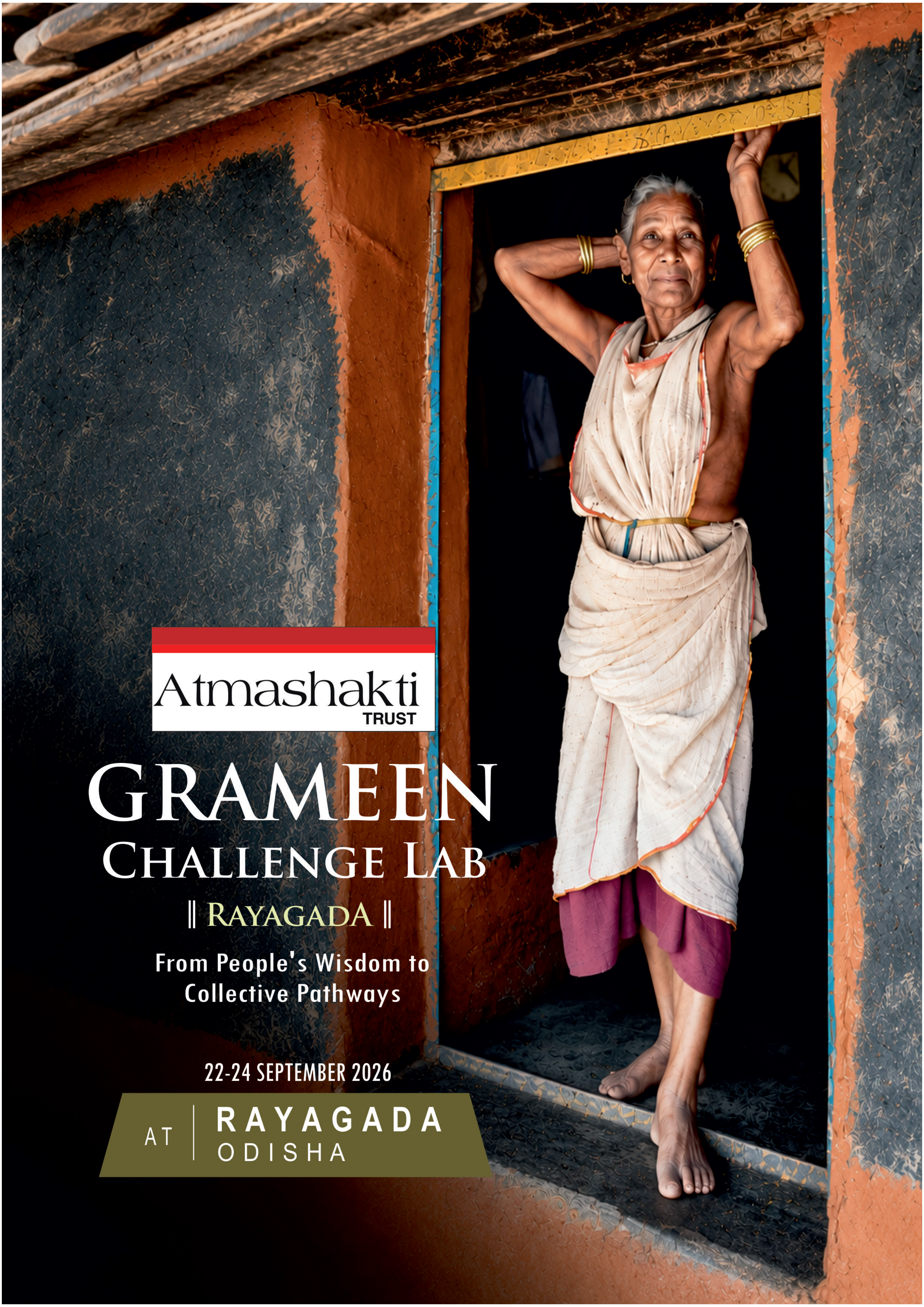
Atmashakti
TRUST
GRAMEEN
CHALLENGE LAB
|| RAYAGADA ||
From People's Wisdom to
Collective Pathways
22-24 SEPTEMBER 2026
AT
RAYAGADA
ODISHA

लोग • स्थान • संस्कृति

ग्रामीण चैलेंज लैब - रायगड़ा

जन-ज्ञान से सामूहिक मार्गों की ओर

22 - 24 सितम्बर 2026

रायगड़ा, उड़ीसा

सुनने, जुड़ने और साथ मिलकर नए रास्ते बनाने का आमंत्रण

रायगड़ा चैलेंज लैब की शुरुआत फरवरी 2026 में बिसम कटक में ग्रामीण चर्चा प्रक्रिया के माध्यम से हुई। सितंबर में हम फिर से इसी सीखने के परिदृश्य में लौट रहे हैं, ताकि समुदाय के नेतृत्व में समस्याओं की पहचान और समझ को और गहरा किया जा सके, स्थानीय ज्ञान एवं संसाधनों को सार्वजनिक व्यवस्थाओं तथा अन्य ज्ञान-स्रोतों से जोड़ा जा सके, और ऐसे संभावित रास्तों की पहचान की जा सके, जिन्हें अगले 90 दिनों में आजमाया और परखा जा सके।

यह कोई ऐसा सम्मेलन नहीं है, जहाँ विशेषज्ञ तैयार समाधान लेकर आएँ। यह तीन दिवसीय सीखने की यात्रा है, जिसमें गाँव के नेता, महिलाएँ, युवा, आदिवासी/स्थानीय ज्ञान के जानकार, निर्वाचित प्रतिनिधि, सरकारी हितधारक, सामाजिक क्षेत्र के कार्यकर्ता और आमंत्रित विशेषज्ञ साथ मिलकर सुनते, समझते और सीखते हैं। इस प्रक्रिया में हम यह समझने का प्रयास करते हैं कि स्थानीय स्तर पर पहले से क्या मौजूद है और उसी आधार पर स्थानीय संदर्भ से जुड़े व्यावहारिक रास्तों का सामूहिक रूप से निर्माण करते हैं।

दिन 1
हम एक साथ जुटे हैं
लोग • नेतृत्व • सामूहिक उद्देश्य

दिन 2
हम गहराई से जुड़ते हैं
सुनें • साथ चलें • साथ भोजन करें • समझें • खोजें

दिन 3
हम मिलकर रास्ते बनाते हैं
जुड़ें • समझें • कल्पना करें • आज़माएँ • संकल्प लें

स्थानीय स्तर पर सुनें.सामूहिक रूप से समझें. साथ मिलकर रास्ते बनाएँ.

इस प्रक्रिया का हिस्सा कौन होंगे?

चैलेंज विलेज के एंकर एवं समितियाँ • सरपंच • वार्ड सदस्य • महिला एवं युवा नेतृत्वकर्ता • किसान एवं श्रमिक • आदिवासी/स्थानीय ज्ञान के जानकार • स्थानीय समुदाय के नेता • संबंधित सरकारी विभाग एवं संस्थाएँ • आत्मशक्ति टीम • आमंत्रित विशेषज्ञ एवं क्षेत्रीय कार्यकर्ता

आमंत्रित प्रतिभागियों के लिए: सह-शिक्षार्थी के रूप में आएँ। सुझाव देने से पहले स्थानीय संदर्भ को सुनें, समझें और उसमें गहराई से जुड़ें। स्थानीय परिस्थितियों को समझने के बाद अपनी तकनीकी, बाज़ार, शासन, सांस्कृतिक, शोध या नीतिगत दृष्टि साझा करें। उभरते हुए रास्तों को उपयोगी संस्थाओं, विशेषज्ञता और नेटवर्क से जोड़ने में सहयोग करें—लेकिन समुदाय के स्वामित्व और नेतृत्व को अपने हाथ में लिए बिना।

तीन दिवसीय यात्रा

ग्रामीण चैलेंज लैब - रायगड़ा | 22-24 सितम्बर 2026

22 SEP

दिन 1 | सामूहिकता – हम एकत्रित होते हैं

रायगढ़ की आवाज़ें – लोग • नेतृत्व • सामूहिक उद्देश्य

- **उद्घाटन संवाद** - लोगों की दीवार • फरवरी से सितंबर तक की यात्रा का मानचित्र
- **हमारी नज़र से रायगढ़** - चुनौतियों और सामर्थ्य की दीवार
- **मिश्रित समूहों का गठन** - सामुदायिक अनुभवों और आवाज़ों को प्राथमिकता देते हुए, लंबे भाषणों के बजाय संक्षिप्त संवाद

• **उद्देश्य**: गाँवों में प्रवेश करने से पहले विश्वास का निर्माण करना और रायगढ़ की साझा तस्वीर को समझना। हम एकत्रित होते हैं, सुनते हैं और समझते हैं– समाधान की ओर जल्दबाज़ी नहीं करते।

23 SEP

दिन 2 | गांवों से - हम गहराई से जुड़ते है

गाँव ही हमारी पाठशाला है

बिसम कटक ब्लाक के चार इमेर्शन गाँव:

1. खाम्बेसी - अनानास का विपणन एवं भंडारण; डोंगरिया बुनाई
2. गर्तोली - कुपोषण एवं पोषण सुरक्षा
3. मुंदरूमास्का - पेयजल
4. घुसरीपदरा - प्रवासन एवं युवाओं की आजीविका
   - गाँव भ्रमण एवं सामुदायिक मानचित्र - संवाद एवं सुनने के समूह - साझा भोजन की मेज़
   - चार-कोना कैनवास - अब तक क्या-क्या प्रयास किए गए हैं? - सामुदायिक सत्यापन एवं प्रतिक्रिया

उद्देश्य: चुनौती, स्थानीय सामर्थ्य, आदिवासी/स्थानीय ज्ञान, अब तक किए गए प्रयासों और वास्तविक बाधा कहाँ मौजूद है—इन्हें सुनना, समझना और पहचानना।

24 SEP

दिन 3 | लैब - हम मिलकर रास्ते बनाते है

जुड़े– समझे - कल्पना करे - आजमाए - संकल्प ले

- गाँव गैलरी – प्रत्येक गाँव से एक चुनौती, एक छिपी हुई सामर्थ्य और एक संभावित
- रायगढ़ चैलेंज मैप – बार-बार सामने आने वाले, गाँवों के बीच साझा और व्यवस्था-स्तर के पैटर्न की पहचान
- मिश्रित चैलेंज टेबल एवं पाथवे स्टूडियो – सामूहिक रूप से संभावित रास्तों का निर्माण
- जन-जूरी – क्या यह उपयोगी है? क्या यह स्थानीय संदर्भ से जुड़ा है? क्या इसका स्वामित्व समुदाय ले सकता है? क्या इसे आज़माया जा सकता है? क्या इसे उपयुक्त संस्थाओं/नेटवर्क से जोड़ा जा सकता है?
- 90-दिवसीय प्रयोग कार्ड – सामुदायिक एंकर, पहला कदम और 30/60/90 दिनों के पड़ाव

उद्देश्य: साक्ष्यों से आगे बढ़ते हुए, समुदाय के स्वामित्व वाले कुछ ठोस रास्तों की पहचान करना, जिन्हें अगले **90** दिनों में आज़माया और परखा जा सके।

चुनौती + संसाधन + स्थानीय / आदिवासी ज्ञान +

योजनाएँ/संस्थाएँ + नए जुड़ाव = ऐसा रास्ता, जिसे हम मिलकर आज़मा सकें

स्थानीय स्तर पर सुनें। सामूहिक रूप से समझें। साथ मिलकर रास्ते बनाएँ।

ग्रामीण चैलेंज लैब

सामुदायिक चुनौतियों से सह-निर्मित समाधानों की ओर

आत्मशक्ति ट्रस्ट • बहुवर्षीय स्थान-आधारित श्रृंखला (2026 – 2028+)

ग्रामीण चैलेंज लैब को एक स्थान-आधारित प्रक्रिया के रूप में परिकल्पित किया गया है, जिसका उद्देश्य समुदाय द्वारा पहचानी गई चुनौतियों से आगे बढ़ते हुए उनकी गहरी समझ विकसित करना, साक्ष्यों को जुटाना, सामूहिक रूप से समस्याओं का समाधान खोजना और व्यवस्था-स्तर पर कार्रवाई की दिशा में आगे बढ़ना है। लैब को एक बार होने वाले कार्यक्रम के रूप में देखने के बजाय, यह एक क्रमिक और संरचित कार्यपद्धति स्थापित करता है, जो समुदाय की आवाज़ों को सरकार, नागरिक समाज, बाज़ार और शोधकर्ताओं के साथ सक्रिय संवाद और सहयोग में लाती है।

1. चैलेंज लेब श्रृंखला

बड़े क्षेत्रीय और नीतिगत प्रभाव के लिए विकसित होता जिला-स्तरीय लैब का नेटवर्क

चैलेंज लैब	वर्ष	श्रृंखला में भूमिका	रणनीतिक प्राथमिकताएँ
रायगगड़ा लैब	2026	प्रथम लैब	मुख्य कार्यपद्धति एवं साक्ष्य ढाँचे का विकास और परीक्षण.
कालाहांडी लैब	2027	अगला लैब	नए जिले के संदर्भ में कार्यपद्धति का अनुकूलन एवं प्रयोग.
संबलपुर लैब	2028	अगला लैब	सीख का विस्तार, तुलनात्मक अध्ययन एवं उपकरणों का परिष्करण.
अन्य जिले एवं राज्य	2029+	विस्तार एवं प्रभाव	विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार कर व्यवस्था-स्तरीय नीतिगत बदलाव को बढ़ावा देना।

2. 10 - चरणीय चक्राकार कार्यपद्धति

स्थानीय स्तर पर सुनने से लेकर व्यवस्था-स्तर पर समावेशन तक की सहभागी एवं चक्राकार कार्यप्रक्रिया

स्थानीय स्तर पर सुने
LIT के सुनने के उपकरण. आदिवासी यात्रा, गाँव संवाद एवं समुदाय के जीवनानुभव।

सामूहिक रूप से समझे
ग्रामीण चर्चा समूह एवं आदिवासी नेतृत्व परिषद के माध्यम से प्रमुख विषयों का सामूहिक सत्यापन।

प्राथमिकता तय करे
समुदाय की प्राथमिकता, व्यवहार्यता, तात्कालिकता एवं व्यवस्था-स्तरीय संभावनाओं के आधार पर मुद्दों का चयन।

व्यवस्था-स्तर पर समझें
संस्थाओं, नीतियों, संसाधनों के वितरण एवं शक्ति-संबंधों के संदर्भ में मूल कारणों का विश्लेषण।

विभिन्न संदर्भों से तुलना करें
अंतर-राज्यीय सीख, Social Innovation Journal (SIJ) एवं विभिन्नताओं का मानचित्रण।

लैब का आयोजन करें
समुदाय, सरकार, नागरिक समाज, अकादमिक संस्थानों, बाज़ार एवं परोपकारी संस्थाओं की संयुक्त टीम तैयार करना

मिलकर समाधान तेयार करे
स्थानीय ज्ञान को तकनीकी एवं बाज़ार विशेषज्ञता के साथ जोड़कर सहभागी तरीके से समाधान विकसित करना।

पायलट की रूपरेखा तैयार करें
परिकल्पना, पायलट योजना, कार्यक्षेत्र, साझेदार एवं संसाधन योजना तैयार करना।

आज़माएँ एवं अनुकूलित करें
90/180-दिवसीय सामुदायिक पायलट, निरंतर फीडबैक, मापन एवं त्वरित सुधार के माध्यम से परीक्षण।.

व्यवस्था में शामिल करें एवं विस्तार करें
Playbooks तैयार करना, संस्थागत मार्ग सुनिश्चित करना, LSDGs एवं नीतियों के साथ एकीकरण तथा विस्तार करना।.

3. रायगढ़ा चैलेंज लैब की कार्यान्वयन समय-रेखा

पहले दस्तावेजीकृत चक्र की विस्तृत समय-रेखा (दिसंबर 2025 – सितंबर 2026)

DEC 2025 — **15 मुद्दों का चिन्हीकरण**

क्या हुआ: समुदायों और जमीनी अनुभवों से सीधे सामने आए 15 प्रमुख मुद्दों का प्रारंभिक संकलन किया
यह क्यों महत्वपूर्ण था: इससे प्रमुख समस्याओं के व्यापक परिदृश्य को समझने में मदद मिली और चैलेंज लैब के लिए एक प्रारंभिक आधार तैयार हुआ।

JAN 2026 — **ग्रामीण चर्चा की योजना**

क्या हुआ: ग्रामीण चर्चा की संरचित योजना प्रक्रिया के माध्यम से RCL (Rayagada Challenge Lab) की रूपरेखा तैयार की गई।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: इससे केवल समस्याओं की सूची बनाने से आगे बढ़कर यह समझने पर ध्यान केंद्रित हुआ कि विभिन्न हितधारक मिलकर इन समस्याओं का समाधान कैसे कर सकते हैं।

FEB 2026 — **हथकरघा अध्ययन एवं ई-केस स्टडीज़**

क्या हुआ: हथकरघा एवं बुनाई से जुड़े पारिस्थितिकी तंत्र का गहन अध्ययन किया गया तथा समुदाय के जीवनानुभवों का प्रारंभिक दस्तावेजीकरण किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: इससे उभरती हुई लैब के लिए क्षेत्रीय, सांस्कृतिक, आजीविका एवं साक्ष्य-आधारित आधार मजबूत हुआ।

22–24 FEB 2026 — **ग्रामीण चर्चा (रायगढा चैलेंज लैब)**

क्या हुआ: समुदाय, सरकार, बाज़ार एवं शोध क्षेत्र से जुड़े हितधारकों को बिसम कटक में एक साथ लाकर बहु-हितधारक संवाद आयोजित किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: *कहानी → मानचित्रण → वास्तविकता की जाँच → सह-निर्माण* की प्रक्रिया के माध्यम से 15 मुद्दों को सीमित कर प्रमुख प्राथमिकताओं की पहचान

MAR 2026 — **सिफारिशें एवं दस्तावेजीकरण**

क्या हुआ: ग्रामीण चर्चा के बाद प्राप्त सीख, सिफारिशों एवं RCL के प्रारंभिक दस्तावेजीकरण को एकीकृत किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: संवाद से प्राप्त निष्कर्षों को प्राथमिकता वाले दिशा-निर्देशों और कार्रवाई-उन्मुख कार्यढाँचे में परिवर्तित किया गया।

APR 2026 — **गाँव में गहन जुड़ाव एव मूल कारणों का विश्लेषण**

क्या हुआ: क्षेत्र भ्रमण के माध्यम से समुदाय की वास्तविक परिस्थितियों, स्थानीय संसाधनों, संस्थागत कमियों, बाज़ार एवं सामाजिक कारकों को समझा गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: ध्यान जिला-स्तरीय समस्याओं से हटकर गाँव-स्तरीय वास्तविकताओं पर केंद्रित हआ—**"समस्याएँ बनी क्यों रहती हैं?"**

MAY 2026 — **मुद्दों एव गाँवों का पुनर्संयोजन**

क्या हुआ: जमीनी निष्कर्षों के आधार पर मुद्दों एवं चयनित गाँवों की पुनः समीक्षा कर उनका पुनर्संयोजन किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: चुनौतियों, गाँव के स्थानीय संदर्भ और संभावित हस्तक्षेप के रास्तों के बीच बेहतर तालमेल स्थापित हआ।

JUN 2026 — **RCL समिति का गठन**

क्या हुआ: प्रक्रिया को दिशा देने और निरंतरता बनाए रखने के लिए एक संस्थागत तंत्र के रूप में RCL समिति का गठन किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: लैब को आगे बढ़ाने के लिए संस्थागत स्वामित्व एवं शासन-व्यवस्था की संरचना तैयार हुई।

JUL 2026 — **SIJ केस स्टडीज़, हैंडबुक एवं GAPA फेलोज़**

क्या हुआ: 8 जुलाई को RCL हैंडबुक जारी की गई, जिसमें कार्यपद्धति का दस्तावेजीकरण किया गया। साथ ही, क्षेत्रीय विश्लेषण के लिए GAPA फेलोज़ को जोड़ा गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: इससे प्रक्रिया एक एकल कार्यक्रम से आगे बढकर एक दस्तावेजीकृत एवं दोहराई जा सकने वाली कार्यपद्धति में विकसित हई।

AUG 2026 — **अनानास सर्वेक्षण एवं LAT निदान अध्ययन**

क्या हुआ: अनानास की मूल्य-श्रृंखला पर केंद्रित सर्वेक्षण किया गया तथा Listening & Analysis Tools (LAT) के माध्यम से संरचित निदान किया गया।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: सामान्य जानकारी के संकलन से आगे बढ़कर व्यवस्थित एवं साक्ष्य-आधारित गाँव-स्तरीय निदान की दिशा में प्रगति हुई।

SEP 2026 — **अनुभव, सुनने एवं समाधान की लैब**

क्या हुआ: समुदाय के जीवनानुभवों, उभरते पैटर्न को समझने तथा समाधान के सह-निर्माण के लिए विभिन्न हितधारकों को एक साथ लाने पर केंद्रित रहा।
यह क्यों महत्वपूर्ण था: प्रारंभिक समस्या पहचान से आगे बढ़ते हुए मानव-केंद्रित डिज़ाइन और कार्रवाई योग्य परीक्षण तक की पूरी प्रक्रिया को पूरा किया

4. 7 प्रमुख यात्रा चरण एवं मार्गदर्शक प्रश्न

चरण	नाम	प्रमुख गतिविधि / टूल	मार्गदर्शक प्रश्न
01	पहचान	15 सामुदायिक मुद्दे	चुनौतियाँ क्या हैं?
02	प्राथमिकता	ग्रामीण चर्चा संवाद	किन चुनौतियों पर सामूहिक कार्रवाई आवश्यक है?
03	निदान	गाँव में गहन जुड़ाव + मूल कारण विश्लेषण	समस्याएँ बनी क्यों रहती हैं?
04	साक्ष्य	केस स्टडीज़ + सर्वेक्षण + LAT	साक्ष्य हमें क्या बताते हैं
05	सुनना	अनुभव सुनने की प्रक्रिया	दैनिक जीवन में चुनौतियों का अनुभव कैसे होता है?
06	विश्लेषण	पैटर्न + व्यवस्था-स्तरीय मानचित्रण	व्यवस्था-स्तर पर क्या बदलने की आवश्यकता है?
07	डिज़ाइन	समाधान लैब में सह-निर्माण	क्या मिलकर तैयार और आज़माया जा सकता है?

5. बहु-स्तरीय प्रभाव ढाँचा

समुदाय (COMMUNITY)

- सशक्त सामूहिक आवाज़
- जमीनी नेतृत्व
- बेहतर आजीविका एवं स्वास्थ्य
- सह-निर्माता के रूप में समुदाय की सक्रिय भूमिका

संस्थाएँ (INSTITUTIONS)

- उत्तरदायी शासन व्यवस्था
- योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन एवं पहुँच में सुधार
- सुदृढ़ सार्वजनिक व्यवस्थाएँ
- जवाबदेही एवं फीडबैक की निरंतर

पारिस्थितिकी तंत्र

- विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग
- साझा साक्ष्य एवं ज्ञान भंडार
- नीतियों एवं कार्यक्रमों में आवश्यकतानुसार अनुकूलन
- व्यापक स्तर पर अपनाई जा सकने

गांवों की पहचान

लोग | स्थान | कहानियाँ | संभावनाएँ

जड़ों से जुड़े
समुदाय
लचीले समाज
और उज्ज्वल
भविष्य की ओर
—

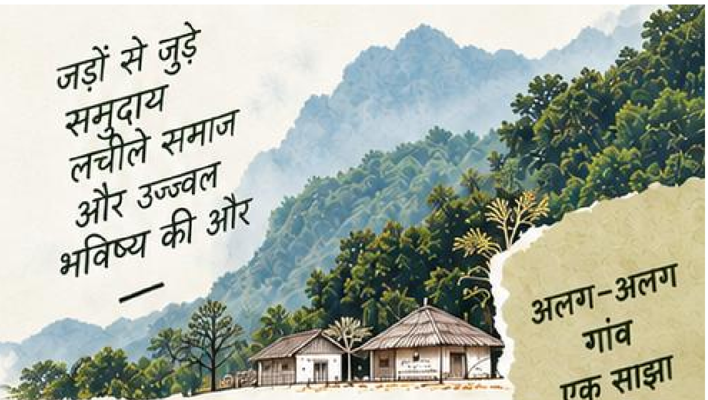

अलग-अलग
गांव
एक साझा
शक्ति
—

01 **खांबेंसी**

बिसम कट्रक, रायगड़ा

02 **गारतोली**

बिसम कट्रक, रायगड़ा

हर गांव
की अपनी
एक कहानी
है
—

मजबूत
लोग
स्वस्थ समुदाय
समृद्ध भविष्य
—

03 **मुंडुरमुस्का**

बिसम कट्रक, रायगड़ा

04 **घुसुरिपदार**

बिसम कट्रक, रायगड़ा

स्थानीय
ज्ञान
स्थायी
बदलाव की
नींव
—

आज के सशक्त गांव,
कल के समृद्ध समाज की ओर

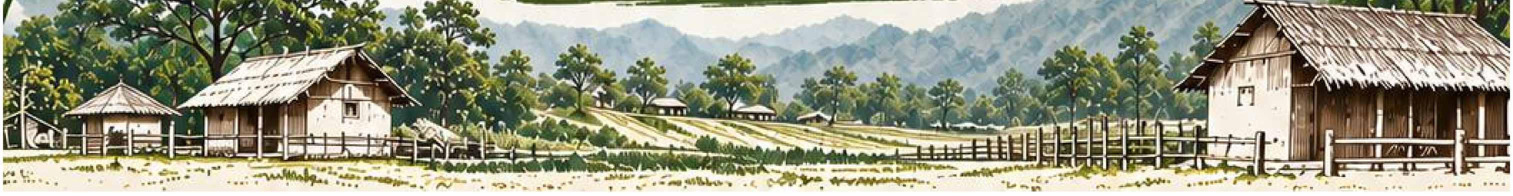

खमबेसी

लोग, स्थान और इतिहास

****

एक डोंगरिया कोंध गाँव

अपनी पहाड़ियों और जीवंत ज्ञान से आकर लेता हुआ

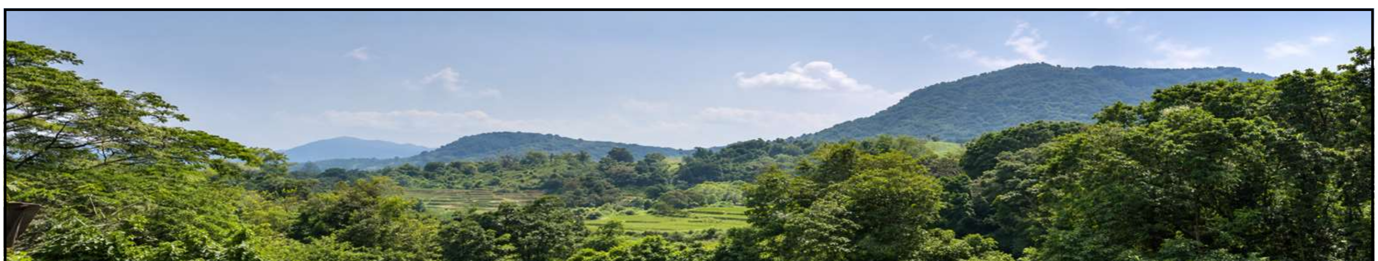

लोग और स्थान

खमबेसी:

पहाड़ की चोटी पर बसा एक गाँव

समुदाय एवं स्थान

उडीसा राज्य के रायगढ़ा जिले के बिस्समकटक ब्लॉक की कुर्ली ग्राम पंचायत (GP), नियमगिरि पहाड़ी क्षेत्र में स्थित है। डोंगरिया कोंध एक विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG) है, जो मुख्यतः नियमगिरि पहाड़ियों के क्षेत्र में निवास करता है, जिसमें बिस्समकटक, कल्याणसिंहपुर और मुनिगुड़ा क्षेत्र शामिल हैं।

क्षेत्र का विस्तार एवं आजीविका

लगभग 1,400 लोगों की आबादी, जो करीब 238 परिवारों में निवास करती है। पहाड़ी भौगोलिक परिस्थितियाँ यहाँ की कृषि, बस्तियों और दैनिक जीवन को प्रभावित करती हैं। धान की खेती के लिए उपयुक्त भूमि सीमित होने के कारण समुदाय मिश्रित पहाड़ी कृषि तथा सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) के चावल पर निर्भर रहता है। समुदाय की आजीविका का संबंध भूमि, जंगल, जल और स्थानीय पारिस्थितिक ज्ञान से गहराई से जुड़ा हुआ है।

इतिहास

अनुकूलन का इतिहास

पोडू कृषि से अनानस तक

पूर्व में

आजीविका मुख्य रूप से पोडू/ स्थानांतरित कृषि, मिश्रित फसलो और प्राकर्तिक संसधानो पर काफी हद तक निर्भर थी। पहाड़ी और दुर्गम भू – भाग के कारन पारंपरिक धान की खेती करना कठिन था।

40–45 वर्ष पहले

4–5 परिवारों ने अनानस की खेती शुरू की। यह फसल पहाड़ी वातावरण के अनुकूल रही और स्थानीय स्तर पर प्रयोग शुरु हुए, जिससे पीढ़ी – दर – पीढ़ी ज्ञान का विकास और हस्तांतरण हुआ।

वर्तमान में

200+ परिवार अब अनानस की खेती करते है। अनानस खमबेसी की प्रमुख नकदी अजिविकाओ में से एक बन गया है – स्थानीय ज्ञान पर आधारित, समुदाय द्वारा विकसित एक स्थानीय अर्थवयवस्था।

लोग

खमबेसी के लोग

ज्ञान ही गाँव की सबसे बड़ी पूँजी है।

खमबेसी की ताकत केवल उसके प्राकृतिक संसाधनों में नहीं, बल्कि वहाँ के लोगों के ज्ञान में भी निहित है—किसानों, महिला कारीगरों, कुशल बुनकरों और सामुदायिक संस्थाओं के ज्ञान में।

किसानो

पीढियों से चली आ रही पहाड़ी कृषि की पारम्परिक जानकारी। अनानास की खेती एवं मिश्रित फसल प्रणाली। हल्दी, अदरक और कलि मिर्च की खेती का पारंपरिक ज्ञान।

महिला कारीगर

परिवार की आजीविका में महत्वपूर्ण योगदानकर्ता। डोंगरिया वस्त्र एवं कढ़ाई की पारंपरिक कला और ज्ञान की संरक्षक। लगभग 53 कारीगर परिवार / 80 कारीगर होने की जानकारी प्राप्त हुई है।

कुशल / मास्टर बुनकर

लगभग 7 मास्टर बुनकरों की पहचान की गई है। डिजाईन, बुनाई की बारीकी, फिनिशिंग एवं गुणवत्ता में दक्ष। विशिष्ट एवं पारंपरिक बुनाई ज्ञान के महत्वपूर्ण संरक्षक।

सामुदायिक सँस्थाए

12 स्वयं सहायता समूह, ग्राम समिति, बुजुर्ग, महिलाएं, युवा एवं किसान समूह। DKDA एवं सरकारी संस्थाओ के साथ पहले से जुड़ाव एवं सहभागिता।

संस्कृति और पहचान

डोंगरिया शाल केवल एक उत्पाद नही है

डोंगरिया शॉल / कपड़ागंडा डोंगरिया कोंध समुदाय की पहचान से गहराई से जुड़ा हुआ है। इसे पारंपरिक रूप से हाथ से बनाया और कढ़ाई किया जाता है, तथा इसके संरक्षण और निरंतरता में मुख्य रूप से महिलाओं का ज्ञान और श्रम महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

1 सांस्कृतिक महत्व / अर्थ

पेटर्न और रंगों का अपना सांकृतिक अर्थ है। डिजाईन समुदाय के पहाड़ो , जंगलो और प्रक्रति के साथ संबध को दर्शाते हैं। एह शिल्प पीढ़ी- दर – पीढ़ी हस्तांतरित होते आ रहे ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

2 भोगोलिक संकेतक

कपडागंडा अब एक पंजीकृत GI उत्पाद है, जो रायगढा के कुरली स्थित निराम्गिरी डोंगरिया कंधो बुनकर संघ के संबंद है।

3 आज खमबेसी मे

~ लगभग 7 मास्टर बुनकरों की पहचान की गई है। बुनाई आज भी एक जीवंत पारंपरिक कोशल के रूप में जारी है। यह शिल्प सांस्कृतिक एवं आजीविका – दोनों द्रष्टियो से महत्वपूर्ण है।

यह शाल केवल एक डिजाईन नहीं, बल्कि पहचान, स्मृति और समुदाय के अपने प्राकृतिक परिवेश के साथ संबध को संजोए हुए है।

कौशल

गाँव में जीवित पारंपरिक कौशल

भूमि से करघे तक — स्थानीय रूप से विकसित क्षमताएँ

These ये गाँव में बहार से लाई क्षमताएँ नहीं है। ये वे क्षमताएँ है, जो समुदायके भीतर पीढ़ी – दर – पीढ़ी विकसित हुई हैं और आज भी समुदाय के पास सुरक्षित एवं जीवित हैं।

कौशल / ज्ञान	द्वारा सरक्षित
अनानास की खेती	किसान
मिश्रित पहाड़ी कृषि	कृषि परिवार
हल्दी, अदरक और काली मिर्च खेती	कृषि
कटाई एवं रख रखाव	अनानास उत्पादक किसान
पारंपरिक कढ़ाई	महिलाएं / कारीगर कलाकार
शॉल डिजाईन और पैटर्न	बुनकर मास्टर
बारीक हस्तकला और फिनिशिंग	अनुभवी कारीगर
सामुदायिक सँस्थाए	स्वयं सहायता समूह और ग्राम समिति
पारिस्थितीक ज्ञान	समुदाय के बुजुर्ग और किसान

आजीविका

अनानास की कहानी

समुदाय द्वारा निर्मित अर्थव्यवस्था

क्या मोजूद है

- स्थानीय उत्पादन का मजबूत ज्ञान
- व्यापारियों के साथ स्थापित संपर्क
- गाँव से बहार तक बाजारों से जुड़ाव
- स्थानीय किस्मे एवं खेती की पारंपरिक प्रथाए

क्या कमी है

- उत्पादों का एकत्रीकरण एवं भण्डारण
- प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन
- मूल्य में पारदर्शिता
- उत्पादकों की मजबूत मोलभाव क्षमता

Pineapple अनानास अत्यधिक जल्दी खराब होने वाला फल है। इसकी बिक्री अवधि लगभग 3 से 6 दिनों के ही होती है, जिसके कारन किसानो पर इसे जल्दी बेचने का दबाव रहता है।

क्राफ्ट

शॉल की कहानी

आर्थिक बदलाव के दौर से गुजरता एक सांस्कृतिक कौशल

1 पहले / पूर्व में

बताया गया है की आधारभूत कपडा स्थानीय स्तर पर ही तैयार या प्राप्त किया जाता था। पूरी उत्पादन प्रक्रिया समुदाय के भीतर ही निहित थी।

2 वर्तमान

आधारभूत कपडा मुख्य रूप से बालासोर से प्राप्त किया जाता है। सोनपुर एवं स्थानों से लाया जाता है। डोंगरिया शाल में इसका विशेष रूपांतरण और बुनाई का कार्य अभी भी स्थानीय स्तर पर ही किया जाता है।

3 चुनोतिया

कच्चे माल पर निर्भरता, कश्रम – प्रधान उत्पादन प्रक्रिया, महिलाओ के श्रम का उचित मूल्यांकन नहीं होना, बुनकर की आखो . दृष्टि पर तनाव की समस्या की जानकारी मिली, उन्नत बुनाई की ज्ञान कुछ ही मास्टर बुनकरों तक सिमित है – इसे युवा कारीगरों तक बेहतर तरीके से हस्तांतरित करने की आवश्यकता है। .

The कच्चे माल की आपूर्ति श्रखला गाँव से बहार चली गई है, लेकिन सांस्कृतिक ज्ञान आज भी खमबेसी में गहराई से निहित है।

संसाधन मेप

खमबेसी का संसाधन मानचित्र

गाँव में पहले से ही आवश्यक आधार मोजूद है।

प्राकृतिक परिवेश

नियमगिरि की पहाड़िया, जंगल, जल और पहाड़ी कृषि

उत्पादन

अनानास • हल्दी • अदरक • कलि मिर्च • मिश्रित फासले

लोग और कौशल

किसान • महिला कारीगर • मास्टर बुनकर •युवा • बुजुर्ग

संस्कृति

डोंगरिया शाल • पारंपरिक डिजाईन • रंगों का ज्ञान • सांस्कृतिक पहचान

सामूहिक क्षमता

12 SHGs • ग्राम समिति • सामुदायिक नेतृत्व

संस्थागत जुडाव

DKDA • सरकारी संस्थाओ के साथ जुड़ाव • प्रक्षिक्षण एवं अनुभव

खमबेसी की कहानी

एक ऐसा समुदाय जिसने अपनी पहचान को बनाए रखते हुए स्वयं को बदलते समय के अनुरूप ढाला है।

पोडु कृषि से एवं निर्वाह-आधारित आजीविकाएँ

अनानास + विविधीकृत कृषि + पारंपरिक शिल्प की और

डोंगरिया ज्ञान, संस्कृति, कौशल को बनाए रखते हुएएवं **नियमगिरि के साथ गहरा संबंध**

अगला कदम

उत्पादन और कौशल का विकास उन व्यवस्थाओं की तुलना में तेज़ी से हुआ है, जो इन्हें बाजारों से जोड़ती हैं। अगला कदम केवल अधिक उत्पादन करना नहीं है।

उत्पादन → संगठित करना → मूल्य संवर्धन → मोलभाव करना → अधिक मूल्य अपने पास रखना

खमबेसी की चुनौती संसाधनों की कमी नहीं है, बल्कि मौजूदा संसाधनों को अधिक मूल्य, सुरक्षा और सामूहिक आवाज़ में बदलने वाली व्यवस्थाओं की सीमित उपलब्धता है।

खमबेसी में प्राकृतिक परिवेश केवल गाँव के जीवन की पृष्ठभूमि नहीं है—यह तय करता है कि लोग कैसे खेती करते हैं, आजीविका कमाते हैं, सृजन करते हैं और जीवन जीते हैं।

चुनोतियो का मानचित्र

खमबेसी की आजीविका संबंधी स्थिति का विश्लेषण

उत्पादन, सांस्कृतिक मूल्य और परिवार की आय के बीच आठ प्रमुख बाधाएँ

सारांश

बाधाओं का मानचित्र

आठ चुनौती क्षेत्र

उत्पादन, सांस्कृतिक मूल्य और परिवार की आय के बीच खमबेसी की आजीविकाओं को आठ प्रमुख व्यवस्था-स्तरीय बाधाएँ प्रभावित करती हैं। प्रत्येक चुनौती एक-दूसरे से जुड़ी हुई है और अन्य चुनौतियों को भी बढ़ाती है। इसलिए, केवल किसी एक समस्या का समाधान पर्याप्त नहीं होगा; इसके लिए व्यापक व्यवस्था को ध्यान में रखते हुए समग्र रूप से काम करने की आवश्यकता है।

मुख चुनौती क्षेत्रों की एक झलक

भूमि एवं बुनियादी संसाधनों की सीमाएँ, अनानास के शीघ्र खराब होने की समस्या, भंडारण एवं लॉजिस्टिक्स की चुनौतियाँ, कमज़ोर उत्पादक सामूहिकता, मूल्य एवं भुगतान व्यवस्था की समस्याएँ, सीमित प्रसंस्करण एवं मूल्य संवर्धन, डोंगरिया शॉल से जुड़ी बाधाएँ तथा संस्थागत एवं व्यवस्था-स्तरीय कमियाँ—ये सभी खाम्बेसी की आजीविका को प्रभावित करने वाले प्रमुख चुनौती क्षेत्र हैं।

अनानास

मजबूत उत्पादन और कमजोर मूल्य श्रंखला

समस्या उत्पादन नहीं हिया – बल्कि फल उत्पादन के बाद क्या होता है , वह है।

उत्पादन का आधार

किसानो के पास दशको का खेती का ज्ञान है। 200 से अधिक अनानास उत्पादक परिवार एक मजबूत उत्पादन आधार में योगदान देते है, जिस पर कोई सवाल नहीं है।

नाशवान होने की समस्या

तय जाता हा की अनानास केवल लगभग 3-6 दिनों तक ही बाज़ार में बेचने योग्य रहता है। बारिश से ख़राब होना तेज हो जाता है। किसान बेहतर दामो का इंतजार नहीं कर सकते और संकट/ मज़बूरी में बेचने को मजबूर हो जाते हैं।

भण्डारण की कमी

गाँव स्तर पर कोई प्रयाप्त भण्डारण या शीत – भण्डारण प्रणाली नहीं है। चट्किना में DKDA की सुविधा का उलेख है लेकिन क्षमता, पहुँच, स्वामित्व और उपयोग अस्पस्ट हैं और सत्यापन की आवश्यकता है।

अनानास की मूल्य श्रृंखला

कहा मूल्य कम हो जाता है

यह बढ़ा एक दुसरे पर निर्भर है- हर कमजोर कड़ी उत्पादन को मिलने वाले अंतिम लाभ को कम करती हैI

कटाई, संग्रहण, भंडारण, मूल्य निर्धारण, प्रसंस्करण और विपणन की व्यवस्थाएँ उत्पादन के साथ-साथ विकसित नहीं हो पाई हैं। इसका परिणाम यह है कि समुदाय अनानास का उत्पादन तो कर सकता है, लेकिन कब, कहाँ, कैसे और किस कीमत पर इसे बेचा जाए—इस पर उसका पर्याप्त नियंत्रण नहीं है।

1 कमज़ोर सामूहिक संग्रहण

अनानास उत्पादकों का कोई मजबूत समूह या FPO नहीं है। किसान व्यक्तिगत रूप से अपनी उपज बेचते हैं, जिससे हर लेन-देन में उनकी सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति कमजोर हो जाती है।

2 उचित मूल्य की जानकारी एवं खोज की व्यवस्था का अभाव

कीमतों, गुणवत्ता श्रेणियों और बाजार की मांग से जुड़ी जानकारी सीमित है। बाजार में वास्तविक रूप से किस कीमत पर उपज खरीदी जा रही है, यह जानने के लिए कोई पारदर्शी व्यवस्था नहीं है।

3 व्यापारियों पर निर्भरता

जल्दी बिक्री की आवश्यकता के कारण सौदेबाजी की शक्ति खरीदारों के पक्ष में झुक जाती है। बताया गया है कि व्यापारी खरीद के समय लगभग 50% भुगतान करते हैं, जबकि शेष राशि व्यापार प्रक्रिया पूरी होने के बाद दी जाती है।

4 श्रम की अधिकता एवं लाभांश में कमी

संग्रहण एवं परिवहन में प्रति फल लगभग ₹2–₹5 का श्रम व्यय बताया गया है, जिससे पहले से ही कम लाभ और घट जाता है। अतिरिक्त उपज को खपाने के लिए स्थानीय स्तर पर कोई प्रसंस्करण केंद्र उपलब्ध नहीं है।

डोंगरिया शाल

सांस्कृतिक संपदा, कमजोर उत्पादन व्यवस्था

मांग मौजूद है। चुनौती यह है कि महिला कारीगरों द्वारा सृजित मूल्य का अधिक हिस्सा उन्हें स्वयं प्राप्त हो।

1 कच्चे माल की अनिश्चित उपलब्धता

आधारभूत कपड़ा बालासोर से तथा धागा सोनपुर एवं अन्य स्थानों से प्राप्त किया जाता है। बाहरी आपूर्ति श्रृंखला पर निर्भरता के कारण उत्पादन की लागत बढ़ती हैं और पूरी प्रक्रिया अधिक अस्थिर हो जाती है।

2 **श्रम-प्रधानता एवं स्वास्थ्य संबंधी जोखिम**

एक सामान्य शॉल तैयार करने में लगभग 45 दिन लगते हैं, जबकि बारीक शॉल तैयार करने में 5–6 महीने तक का समय लग सकता है। लंबे समय तक बुनाई करने से दृष्टि एवं आँखों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। महिलाओं के श्रम को अक्सर अंशकालिक या मनोरंजन के रूप में देखा जाता है, जिससे उनके महत्वपूर्ण आर्थिक एवं सांस्कृतिक योगदान की वास्तविकता सामने नहीं आ पाती।

3 कौशल, सामूहिक व्यवस्थाएँ एवं डिज़ाइन संरक्षण

लगभग सात मास्टर बुनकरों के पास विशेष रूप से उन्नत कौशल है, जिससे इन कौशलों को व्यवस्थित रूप से अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की आवश्यकता और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। कच्चे माल की खरीद, लागत निर्धारण, गुणवत्ता, ब्रांडिंग, मूल्य पर बातचीत एवं डिज़ाइन संरक्षण के लिए अधिक मजबूत सामूहिक व्यवस्थाओं की आवश्यकता है। पूर्व में डिज़ाइन की नकल से जुड़ी चिंताओं को देखते हुए, समुदाय के स्वामित्व एवं सांस्कृतिक संरक्षण के उपायों को मजबूत करना और भी महत्वपूर्ण हो गया है।

निष्कर्ष / मुख्य बात

डोंगरिया शॉल की बाजार में मांग और सांस्कृतिक महत्त्व दोनों हैं, लेकिन इसे तैयार करने वाली महिलाओं के पास अभी तक इस मूल्य का पर्याप्त हिस्सा प्राप्त करने के लिए मजबूत व्यवस्था नहीं है।

सामूहिक संगठन

व्यापक रूप से प्रभाव डालने वाली बाधा

1 व्यक्तिगत उत्पादक

किसान और कारीगर सामूहिक समन्वय या साझा जानकारी के बिना व्यक्तिगत रूप से ही मोलभाव करते हैं।

2 मोल भाव करने में कमजोरी

व्यक्तिगत स्तर पर होने वाली बातचीत से अपेक्षित परिणाम नहीं मिल पाते। शर्तें तय करने, कीमतों के दबाव का सामना करने या बुनियादी सुविधाओं तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए कोई एकजुट सामूहिक आवाज़ नहीं है।

3 मूल्य का कम हिस्सा प्राप्त होना

संस्थागत आवाज़ का बिखराव होने के कारण कम लाभ, सरकारी योजनाओं तक सीमित पहुँच और आजीविका को प्रभावित करने वाली व्यवस्थाओं को प्रभावित करने की क्षमता कम रहती है।

जो पहले से मोजूद है उसी को आधार बनाकर आगे बढे

खमबेसी में किसान, कारीगर, 12 स्वयं सहायता समूह (SHGs) और एक ग्राम समिति मौजूद हैं। ये आगे बढ़ने के लिए एक मजबूत आधार हैं, लेकिन अभी तक आजीविका से जुड़ी पर्याप्त रूप से सशक्त एवं प्रभावी संस्थाओं के रूप में कार्य नहीं कर रहे हैं।

प्रमुख सिदांत

समानांतर संस्थाएँ न बनाएं — पहले से मौजूद 12 स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और ग्राम समिति को मजबूत आधार के रूप में विकसित करें।

अनानास के मामले में, किसान एकजुटता की कमी और उत्पादक समूह के अभाव को प्रमुख कारण मानते हैं, जिसके चलते बुनियादी सुविधाओं के लिए किए गए आवेदन अभी तक ठोस कार्रवाई में परिवर्तित नहीं हो पाए हैं।

मौजूदा समूह स्वयं एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं — इन्हें समाप्त या प्रतिस्थापित करने के बजाय मजबूत करने की आवश्यकता है।

व्यवस्था एवं सुचना संबंधी कमियाँ

व्यवस्था- स्तरीय बाधाएँ एवं अद्रश्य अड़चन

संस्थागत आवाज़ एवं बिखरा हुआ सहयोग

किसानों का कहना है कि सरकार के समक्ष उनकी "कोई आवाज़ नहीं" है और उनके द्वारा किए गए आवेदन लगातार ठोस कार्रवाई में परिवर्तित नहीं हो पाते। DKDA का सहयोग उपलब्ध है, लेकिन इसे अधिक नियमित, पूर्वानुमानित, मापनीय और विस्तार योग्य व्यवस्था में बदलने की आवश्यकता है। पूरे समाधान की जिम्मेदारी किसी एक संस्था या पक्ष के पास नहीं है।

कमजोर समन्वय

किसान, उत्पादक समूह, व्यापारी, सरकारी विभाग, खरीदार और शिल्प से जुड़ी संस्थाएँ आपस में पर्याप्त समन्वय के बिना अलग-अलग स्तरों पर कार्य कर रही हैं। सरकारी योजनाओं तक पहुँच केवल योजना के उपलब्ध होने से सुनिश्चित नहीं होती; **समुदाय कौ पात्रता, संबंधित विभाग/संस्था, आवश्यक दस्तावेज़, आवेदन एवं प्रक्रिया के मार्ग तथा आगे की कार्रवाई की जिम्मेदारी के बारे में स्पष्ट जानकारी और मार्गदर्शन की आवश्यकता है।**

जानकारी का अभाव

समय पर सही जानकारी उपलब्ध न होने के कारण उत्पादक बाजार से जुड़े मजबूत निर्णय नहीं ले पाते। **अनानास उत्पादकों** को वर्तमान बाजार मूल्य, खरीदारों, गुणवत्ता श्रेणियों तथा भुगतान की शर्तों की जानकारी की आवश्यकता है। **शॉल कारीगरों** को खरीदारों के विभिन्न वर्गों, डिज़ाइन की पसंद, लागत निर्धारण और बाजार में उत्पाद की स्थिति से जुड़ी जानकारी चाहिए।
जानकारी का अभाव → कमजोर निर्णय → कमजोर सौदेबाजी → मूल्य का कम हिस्सा प्राप्त होना।

> **"समय पर सही जानकारी उपलब्ध न होने के कारण उत्पादक बाजार से जुड़े प्रभावी निर्णय नहीं ले पाते। सूचना का यह अंतर एक अदृश्य लेकिन प्रभावशाली बाधा है, जो व्यवस्था की अन्य सभी कमजोरियों को और बढ़ा देता है।"**

मुख्य कहानी

खमबेसी : मजबूत संसाधन और कमजोर जुडाव

समुदाय के पास संसाधन है

भूमि · पारंपरिक ज्ञान · अनानास की खेती · कुशल महिला बुनकर · सांस्कृतिक पहचान (डोंगरिया शॉल) · 12 स्वयं सहायता समूह (SHGs) · ग्राम समिति

आगे सत्यापन की आवश्यकता वाले बिंदु

जल — पेयजल की उपलब्धता, सिंचाई, जल स्रोत, मौसमी स्थिति तथा जल संकट से संबंधित पर्याप्त साक्ष्य इस निदान में अभी उपलब्ध नहीं हैं। इन्हें क्षेत्रीय अनुभवों और फील्ड से प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर जोड़ा जाए; बिना प्रमाण के कोई निष्कर्ष न निकाला जाए।
प्रवासन — इस विषय को अभी पर्याप्त रूप से शामिल नहीं किया गया है। यदि फील्ड चर्चाओं से मौसमी प्रवासन की पुष्टि होती है, तो इसे आजीविका की कमियों, मौसमी आय, मजबूरी में होने वाले प्रवासन तथा युवाओं की आकांक्षाओं के संदर्भ में समझा जाए। इसे **"आगे सत्यापन आवश्यक विषय"** के रूप में प्रस्तुत किया जाए।

लेकिन कई बाधाओ और कमजोर व्यवस्थाओ का सामना करना पड़ता है

प्रमुख बाधाएँ: भूमि संबंधी सीमाएँ · भौगोलिक/स्थलाकृतिक चुनौतियाँ · शीघ्र खराब होने वाली उपज · कच्चे माल की अनिश्चित उपलब्धता · स्वास्थ्य संबंधी जोखिम · सूचना की कमी
कमज़ोर व्यवस्थाएँ: सामूहिक संगठन · भंडारण · परिवहन · उचित मूल्य की जानकारी एवं खोज की व्यवस्था · संस्थागत जुड़ाव · प्रसंस्करण
व्यवस्था-स्तरीय बाधाएँ: सहयोग का बिखराव · कमजोर सामूहिक आवाज़ · समन्वय की कमी · कार्रवाई में देरी
परिणाम: किसानों को कम एवं अनिश्चित आय · महिलाओं के श्रम का उचित मूल्यांकन न होना · आजीविका की सीमित सुरक्षा

खमबेसी में संसाधनों की कमी नहीं है। कमी उन व्यवस्थाओं की है, जो इन संसाधनों को मूल्य से जोड़ सकें।"
अवसर यह नहीं है कि समुदाय के पास जो पहले से मौजूद है, उसे बदला जाए—बल्कि उन कड़ियों को मजबूत किया जाए, जो समुदाय को अधिक मूल्य सृजित करने, बेहतर तरीके से मोलभाव करने और अपने हिस्से का अधिक मूल्य अपने पास रखने में सक्षम बनाती हैं।

अवलोकन

गरतोली - एक नज़र में

समुदाय और स्थान

डोंगरिया कंध समुदाय | कुली ग्राम पंचायत | बिसम कटक | रायगड़ा, ओडिशा | 68 परिवार | 345 लोग

आजीविका और बच्चे

कृषि • एनटीएफपी (NTFP) • अनानास • मजदूरी। आंगनवाड़ी में 6 वर्ष से कम उम्र के 36 बच्चे नामांकित हैं।

व्यापक परिपेक्ष्य

गरतोली की पहाड़ी भौगोलिक स्थिति का प्रभाव भोजन → आजीविका → बाजार → स्वास्थ्य → PDS → सरकारी योजनाओं एवं अधिकारों तक पहुँच पर पड़ता है।
यह एक ऐसा गाँव है जहाँ संसाधन मौजूद हैं, लेकिन व्यवस्थाओं तक पहुँच समान नहीं है।

परिदृश्य और आजीविका

पहाड़ियाँ दैनिक जीवन को आकार देती हैं

खेती

स्थानीय परिदृश्य के अनुकूल कृषि। अनानास अर्थव्यवस्था में शामिल हो गया है — लेकिन उत्पादन आनुपातिक आय में परिवर्तित नहीं हुआ है।

सेवाओं तक पहुँच

पीएचसी ~2 किमी (सीमित डॉक्टर), सीएचसी ~15 किमी दूर। दूरी और इलाके से स्वास्थ्य, पीडीएस और सरकारी योजनाओं के लिए परिवहन बाधाएं बनती हैं।

प्रमुख बाधा

वही भौगोलिक परिस्थितियाँ, जो आजीविका और पारिस्थितिकीय ज्ञान को बनाए रखने में सहायक हैं, बाजार, सेवाओं और अवसरों तक पहुँच की लागत को भी बढ़ाती हैं—यह एक ऐसी संरचनात्मक चुनौती है, जिसका प्रभाव कई क्षेत्रों पर पड़ता है।

संसाधन

गरतोली का संसाधन मानचित्र

गाँव में पहले से ही आवश्यक आधार मोजूद है

भूमि और प्राकृतिक संसाधन

कृषि • लघु वनोपज (NTFP) • बागवानी • अनानास • स्थानीय खाद्य संसाधन

लोग और ज्ञान

कृषि संबंधी ज्ञान • खाद्य संबंधी ज्ञान • बाल देखभाल की पारंपरिक प्रथाएँ • स्थानीय पारिस्थितिकीय ज्ञान

परिवार के पोषण संबंधी संसाधन

15 में से 14 उत्तरदाताओं ने बताया कि शिशु को जन्म के बाद शीघ्र स्तनपान कराया गया। छह माह तक केवल स्तनपान कराने की जानकारी मिली। 15 में से 5 परिवारों में रसोई बगीचा (Kitchen Garden) है।

सामुदायिक मंच

36 बच्चों के नामांकन वाला आंगनवाड़ी केंद्र वृद्धि की निगरानी, परामर्श, पोषण संबंधी सहायता, रेफरल तथा फॉलो-अप के लिए एक संभावित सामुदायिक मंच के रूप में कार्य कर सकता है।

चुनौती बाहर से सब कुछ नया तैयार करने की नहीं है—बल्कि जो पहले से मौजूद है, उसे मजबूत करने, आपस में जोड़ने और व्यापक स्तर पर विस्तार देने की है।

चुनौतियाँ

अनेक चुनौतियाँ, एक अंतर-संबंधित प्रणाली

1 **भोजन और पोषण**

मौसमी खाद्य कमी। चावल पर अधिक निर्भर आहार। आहार में सीमित विविधता। अंडे और फलों का सेवन केवल कभी-कभार।

2 **आजीविका और आय**

स्थानीय रोजगार के सीमित अवसर। अनानास का उचित मूल्य न मिलना। परिवारों की सीमित क्रय क्षमता।

3 **जल स्वच्छता और स्वास्थ्य**

सभी पेयजल एवं घरेलू जरूरतों के लिए एक ही नलकूप पर निर्भरता। सर्वेक्षण किए गए किसी भी परिवार ने पानी को शुद्ध करने या शौचालय की उपलब्धता की जानकारी नहीं दी। डॉक्टरों की सीमित उपलब्धता तथा स्वास्थ्य सेवाओं के लिए रेफरल तक पहुँच में कठिनाई।

4 **सरकारी योजनाए एवं अधिकार**

5 परिवारों के पास राशन कार्ड नहीं है। KYC पूरा होने के बावजूद 6 व्यक्तियों के पास आधार कार्ड नहीं है। लगभग 2–3 पात्र व्यक्ति सुभद्रा योजना के लाभ से वंचित हैं।

साँझा समस्या

पहाड़ी भौगोलिक स्थिति → कठिन पहुँच → सीमित आय एवं मौसमी खाद्य असुरक्षा → आहार में कम विविधता → बाल कुपोषण

बाल कुपोषण

7 रिपोर्ट किए गए बनाम 17 पहचाने गए

गरतोली के आंगनवाड़ी केंद्र में नियमित पोषण निगरानी की व्यवस्था में एक महत्वपूर्ण कमी सामने आई।

36

6 साल से कम से 36 बच्चो का आंगनवाड़ी में नामांकन

7

आगंनवाड़ी केन्द्रों द्वारा बताया गया

नियमित रिपोर्टिंग के माध्यम से कुपोषित के रूप में चिन्हित बच्चे

17

आकलन में चिन्हितकरण

गहन आकलन में पोषण संबंधी चिंताओं वाले बच्चे चिन्हित हुए — 7 लड़के, 10 लड़कियाँ।

10

अतिरिक्त बच्चे

5 बच्चे उम्र के अनुसार कम लंबाई वाले; 12 बच्चे उम्र के अनुसार कम वजन वाले।

> "गहन आकलन में 17 बच्चों की पहचान हुई, जबकि नियमित रिपोर्टिंग में केवल 7 बच्चे चिन्हित किए गए—ऐसा क्यों? यह केवल संख्या का प्रश्न नहीं है, बल्कि पोषण निगरानी व्यवस्था की प्रभावशीलता से जुड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है।"

बाधाएं

प्रणाली कहाँ अटक रही है?

1

पहचान में अंतर

7 बच्चे रिपोर्ट किए गए, जबकि 17 बच्चे चिन्हित हुए। मापन, वर्गीकरण, रिकॉर्डिंग, जानकारी के अद्यतन एवं फॉलो-अप में संभावित कमियाँ।

2

आंगनवाड़ी केंद्र से जुड़ाव

13 बच्चे नियमित रूप से आंगनवाड़ी केंद्र नहीं आते हैं—जिसके कारण वे पोषण निगरानी, परामर्श, पोषण संबंधी सहायता एवं फॉलो-अप से वंचित रह सकते हैं।

3

भोजन एवं आहार

सर्वेक्षण किए गए 15 में से सभी 15 परिवारों ने मौसमी खाद्य कमी की जानकारी दी। आहार में चावल की प्रधानता है, जबकि प्रोटीन, फलों एवं सब्जियों की उपलब्धता/खपत सीमित है।

4

जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सरकारी योजनाएँ व अधिकार

एक ही नलकूप पर निर्भरता, किसी भी परिवार द्वारा शौचालय या पानी के उपचार की जानकारी नहीं दी गई। डॉक्टरों की सीमित उपलब्धता। राशन कार्ड, आधार कार्ड एवं सरकारी योजनाओं के लाभ से जुड़ी कमियाँ अभी भी बनी हुई हैं।

निदान में पोषण, खाद्य सुरक्षा, जल एवं स्वच्छता (WASH), स्वास्थ्य, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS), आजीविका तथा सरकारी योजनाओं एवं अधिकारों से जुड़ी इन परस्पर संबंधित बाधाओं को एक ही परस्पर जुड़ी हुई व्यवस्था के रूप में चिन्हित किया गया है।

मूल कारण

कुपोषण क्यों बना हुआ है?

1

स्तर 1 — तात्कालिक कारण

उम्र के अनुसार कम वजन + उम्र के अनुसार कम लंबाई + अपर्याप्त आहार + बीमारी

2

स्तर 2 — परिवार स्तर के कारण

मौसमी खाद्य कमी + सीमित आय + आहार में कम विविधता

3

स्तर 3 — सेवा वितरण संबंधी कारण

कमज़ोर वृद्धि निगरानी + अपूर्ण पहचान + स्वास्थ्य सेवाओं तक सीमित पहुँच + PDS से जुड़ी बाधाएँ

4

स्तर 4 — संरचनात्मक कारण

पहाड़ी भौगोलिक स्थिति + आदिवासी समुदायों का हाशियाकरण + कमजोर बुनियादी ढाँचा + सेवाओं की बिखरी हुई व्यवस्था

कुपोषण केवल भोजन से जुड़ी एक अलग समस्या नहीं है। यह भोजन + आय + देखभाल + स्वास्थ्य + जल एवं स्वच्छता (WASH) + सेवाएँ + भौगोलिक स्थिति के आपसी संबंधों से उत्पन्न होने वाली एक जटिल समस्या है।

प्रतिक्रिया

गरतोली क्या चीजो की जरूरत है

अलग-अलग योजनाओं से एकीकृत ग्राम-स्तरीय समाधान की ओर

1

बच्चे — सत्यापन एवं फॉलो-अप

सभी 36 बच्चों का सत्यापन करें। 7 और 17 बच्चों के बीच के अंतर का मिलान एवं कारणों की जाँच करें। प्रत्येक संवेदनशील बच्चे का व्यक्तिगत आकलन करें। दोबारा मापन करें और आवश्यक फॉलो-अप सुनिश्चित करें।

2

भोजन एवं आहार में विविधता

मौसमी खाद्य संसाधनों का मानचित्रण। **रसोई बगीचे का विस्तार** — वर्तमान में 15 में से 10 परिवारों के पास रसोई बगीचा नहीं है। स्थानीय सब्जियों, फलों एवं किफायती प्रोटीन स्रोतों को बढ़ावा देना।

3

आजीविका — आय में सुधार

अनानास के लिए बेहतर बाजार तक पहुँच, बाजार मूल्य की जानकारी एवं सामूहिक सौदेबाजी की व्यवस्था को मजबूत करना। आजीविका से होने वाले लाभ को सीधे परिवार के पोषण में सुधार से जोड़ना।

4

जल, स्वच्छता, स्वास्थ्य एवं सरकारी योजनाएँ व अधिकार

विश्वसनीय जल उपलब्धता, जल उपचार एवं शौचालय की सुविधा। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुँच बढ़ाना तथा रेफरल सहायता सुनिश्चित करना। प्रत्येक पात्रता संबंधी मामले को पूर्ण रूप से हल करना — राशन कार्ड, आधार कार्ड, सुभद्रा योजना एवं PDS से जुड़े मामलों का समाधान।

समापन

गरतोली

मजबूत समुदाय — कमजोर अंतिम-छोर की व्यवस्थाएँ

गरतोली ऐसा गाँव नहीं है जहाँ संसाधनों का अभाव हो। यहाँ **लोग, भूमि, कौशल और संस्थाएँ** मौजूद हैं। लेकिन इन संसाधनों और व्यवस्थाओं के बीच जुड़ाव कमजोर है:
भोजन हमेशा पोषण में नहीं बदलता; उत्पादन हमेशा आय में नहीं बदलता; पहचान हमेशा फॉलो-अप तक नहीं पहुँचती; और सेवाएँ हमेशा अंतिम छोर तक नहीं पहुँच पातीं।

असुरक्षा से सुदृढ़ता की ओर

पहचान करें — प्रत्येक बच्चे और संवेदनशील परिवार की।
जोड़ें — पोषण, आजीविका, स्वास्थ्य, WASH एवं सामाजिक सुरक्षा को।
मजबूत करें — रसोई बगीचे, कृषि, अनानास उत्पादन एवं मौजूदा सेवाओं को।
फॉलो-अप करें — ताकि पहचान से वास्तविक सुधार और पुनर्बहाली सुनिश्चित हो।
मूल्य को समुदाय के पास बनाए रखें — उत्पादन एवं सरकारी योजनाओं/अधिकारों से मिलने वाले लाभ का अधिकतम हिस्सा परिवारों तक पहुँचे।

> गरतोली की चुनौती संसाधनों की कमी नहीं है। चुनौती उन बाधाओं और व्यवस्था-स्तरीय कमियों की है, जो उपलब्ध संसाधनों और सार्वजनिक सेवाओं को प्रत्येक परिवार के लिए बेहतर पोषण, मजबूत आजीविका और अधिक सुरक्षा में बदलने से रोकती हैं। प्राथमिकता केवल कुपोषण का उपचार करना नहीं है—बल्कि बच्चे के आसपास की पूरी व्यवस्था को मजबूत करना है।"

बच्चा → परिवार → समुदाय → सेवाएँ → व्यवस्था

घुसुरिपदर

लोग, स्थान, आजीविका & पलायन

रासोकोला ग्राम पंचायत, बिसम कटक ब्लाक, रायगढ़ा,उड़ीसा

एक कुई कोंध गाँव, जिसकी जीवन-व्यवस्था कृषि, वन संसाधनों, महिलाओं के श्रम और बेहतर आजीविका की तलाश से आकार लेती है।

अवलोकन

एक नज़र में

लोग & पलायन

कुई कोंध समुदाय। 50 परिवार। 22 परिवारों के 25 सदस्य काम की तलाश में बेंगलुरु, केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की ओर प्रवास करते हैं।

आर्थिक अंतर

स्थानीय मजदूरी: लगभग ₹200/दिन। प्रवासी मजदूरी: लगभग ₹500–600/दिन। यह मजदूरी का अंतर लोगों के प्रवास करने के लिए एक मजबूत आर्थिक प्रोत्साहन पैदा करता है।
गाँव की आजीविका मुख्यतः कृषि, धान एवं मोटे अनाज, उड़द एवं मिश्रित दालें, मजदूरी, वन खाद्य, लघु वनोपज (NTFPs), पशुपालन, इमली तथा स्वयं सहायता समूहों (SHGs) पर आधारित है।

समुदाय

घुसुरिपदर के लोग

लोग केवल प्रवासी नहीं हैं—वे किसान, श्रमिक, उत्पादक और ज्ञान के संरक्षक भी हैं।

किसान

कृषि स्थानीय अर्थव्यवस्था की आधारशिला बनी हुई है। किसान धान, मोटे अनाज, दालें, उड़द, कुल्थी तथा अन्य द्वितीयक फसलों की खेती करते हैं। बताया गया है कि लगभग 38.9% किसान 18–35 वर्ष की आयु के हैं।

महिलाएं

महिलाएँ सक्रिय आर्थिक भागीदार हैं—कृषि, स्वयं सहायता समूहों (SHGs), घरेलू अर्थव्यवस्था, प्रवासन तथा सिलाई-कढ़ाई के कार्यों में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका है। नवीनतम फील्ड विज़िट में 25 प्रवासियों में 17 महिलाएँ दर्ज की गईं, जिससे महिलाओं का प्रवासन गाँव की आजीविका की कहानी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनकर सामने आता है।

सवाल

युवाओं का प्रवासन एक प्रमुख चिंता के रूप में सामने आया है। ऐसे कौन-से स्थानीय अवसर विकसित किए जा सकते हैं, जो युवाओं को कम-से-कम वर्ष के कुछ महीनों के लिए गाँव में रहने और काम करने के लिए प्रेरित करें?

परिदृश्य

परिदृश्य & ग्रामीण जीवन

भूमि एक आधार प्रदान करती है—लेकिन पर्याप्त आय नहीं।

गाँव मुख्यतः पहाड़ी भू-भाग में स्थित है, जो कृषि के विस्तार को सीमित करता है, फसल चयन को प्रभावित करता है और खेती को बड़े स्तर पर विस्तार देना कठिन बनाता है। फिर भी, भूमि और वन दोनों मिलकर समुदाय की आजीविका और जीवन-यापन का आधार बने हुए हैं।

1

कृषि की जमीन

लगभग 30 एकड़ भूमि दर्ज की गई है। भूमि जोत का आकार छोटा है; बताया गया है कि लगभग 10 परिवारों के पास RoR/पट्टा उपलब्ध है।

2

वन संसाधन

वन से समुदाय को पारंपरिक खाद्य पदार्थ, कंद-मूल, फल, बीज, मोटे अनाज, दालें तथा विभिन्न प्रकार की लघु वनोपज (NTFPs) प्राप्त होती हैं।

3

साझा सामुदायिक संसाधन एवं पशुधन

लगभग 16 परिवारों में बकरी पालन किया जाता है। गाँव में मुर्गी पालन व्यापक रूप से प्रचलित है। इसके अलावा, गाय एवं अन्य पशुधन भी परिवारों के पास उपलब्ध हैं।

4

विरोधाभास

गाँव में उत्पादक संसाधन मौजूद हैं—लेकिन इन संसाधनों से होने वाली आर्थिक आय अभी भी सीमित है।

इतिहास

प्रवासन का हालिया इतिहास

जब स्थानीय आजीविकाएँ पर्याप्त नहीं रहीं।

1 — 2002–03 पहले

गाँव की आजीविका मुख्यतः कृषि, वन संसाधनों, पारंपरिक खाद्य प्रणालियों, पशुपालन और स्थानीय मजदूरी पर आधारित थी।

2 — 2002–03 के आस पास

प्रवासन आजीविका की एक अतिरिक्त रणनीति के रूप में उभरकर सामने आया। धीरे-धीरे प्रवासन के नेटवर्क बेंगलुरु से आगे बढ़कर केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश तक विस्तारित हुए।

3 — वर्तमान / आज

वासी मुख्यतः ईंट भट्ठों, प्लाईवुड से जुड़े कार्यों तथा सिलाई-कढ़ाई के काम में लगे हैं। प्रवास के दौरान मिलने वाली मजदूरी लगभग ₹500–600 प्रतिदिन बताई गई है।

महत्वपूर्ण ऐतिहासिक जानकारी में कमी

निदान में गाँव की स्थापना, बसावट की उत्पत्ति, पारंपरिक संस्थाओं एवं विस्तृत सांस्कृतिक इतिहास का पर्याप्त दस्तावेजीकरण नहीं किया गया है। इन पहलुओं को गाँव के बुजुर्गों एवं समुदाय के सदस्यों के साथ मौखिक इतिहास के माध्यम से समझकर और विकसित किया जाना आवश्यक है।

आर्थिक

Ghusuripadar's Livelihood System

1 — गाँव

कृषि + वन + पशुधन + स्थानीय मजदूरी — ये मिलकर समुदाय को **भोजन, मौसमी आय, पारंपरिक ज्ञान एवं घरेलू संसाधन** उपलब्ध कराते हैं।

2 — आस पास का बाज़ार

निकटतम **हाट सहाड़ा में लगभग 7 किमी** की दूरी पर है। व्यापारी इमली की खरीद करते हैं। **सामूहिक संग्रहण एवं मूल्यवर्धन की सुविधाएँ सीमित हैं।**

3 — बाहरी श्रम बाजार

बेंगलुरु, केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश की ओर प्रवासन से लगभग **₹500–600 प्रतिदिन** की मजदूरी मिलती है, जो स्थानीय आय की तुलना में **काफी अधिक नकद आय** उपलब्ध कराती है।

वर्तमान की आर्थिक स्थिति

गाँव के संसाधन **आजीविका का आधार** प्रदान करते हैं, जबकि बाहरी श्रम बाजार **अधिक नकद आय** उपलब्ध कराते हैं।

प्रवासन क्यों बना हुआ है

स्थानीय मजदूरी: लगभग ₹200/दिन
प्रवासी मजदूरी: लगभग ₹500–600/दिन
अंतर: बाहर काम करने पर लगभग **2.5–3 गुना अधिक आय**

संसाधन

घुसुरिपदर संसाधन मानचित्र

ा गाँव संसाधन विहीन नहीं है। अवसर इन संसधानो को बदलने का नहीं बल्कि इन्हें बेहतर बाज़ार, कौशल, सेवाओ और आय से जोड़ने का है।

जमीन & कृषि

लगभग 30 एकड़ कृषि भूमि। धान, मोटे अनाज, दालें, उड़द, कुल्थी तथा द्वितीयक फसलों की खेती का स्थानीय कृषि ज्ञान उपलब्ध है।

जंगल, इमली & पशुधन

वन से कंद-मूल, फल, बीज एवं विभिन्न प्रकार की लघु वनोपज (NTFPs) प्राप्त होती हैं। लगभग 8–10 इमली के पेड़ हैं, जिनसे समुदाय से जुड़ी अनुमानित ₹40,000–50,000 वार्षिक आय होती है। लगभग 16 परिवारों में बकरी पालन किया जाता है, जबकि मुर्गी पालन लगभग सभी परिवारों में प्रचलित है।

लोग & संगठित संसाधन

2 स्वयं सहायता समूह (SHGs), सामुदायिक संस्थाएँ तथा इमली से प्राप्त आय के सामूहिक उपयोग का मौजूदा अनुभव।किसान, युवा, महिलाएँ, प्रवासी श्रमिक एवं पारंपरिक ज्ञान के संरक्षक।

> “एक ऐसा गाँव जहाँ भूमि, वन, पशुधन, कौशल और सामुदायिक संसाधन मौजूद हैं—लेकिन इन्हें सुरक्षित एवं बेहतर आय वाली स्थानीय आजीविका में बदलने के अवसर सीमित हैं।”

अन्य चुनोतिया

कई चुनौतियाँ, लेकिन एक ही परस्पर जुड़ी हुई व्यवस्था।

संरचनात्मक बाधाएँ

छोटी एवं बिखरी हुई भूमि: लगभग 30 एकड़ भूमि; लगभग 10 परिवारों के पास RoR/पट्टा है। इससे निवेश और कृषि के विस्तार की संभावनाएँ सीमित होती हैं।

मौसमी कृषि: धान एवं अन्य फसलों से पूरे वर्ष पर्याप्त नकद आय उपलब्ध नहीं हो पाती। स्थानीय मजदूरी कम: गाँव में लगभग ₹200/दिन, जबकि बाहर लगभग ₹500–600/दिन की मजदूरी मिलती है।

सीमित स्थानीय उद्यम: बकरी पालन, मुर्गी पालन, लघु वनोपज (NTFPs), इमली एवं स्वयं सहायता समूह (SHGs) अभी इतने मजबूत नहीं हैं कि स्थानीय स्तर पर नियमित एवं भरोसेमंद आय सुनिश्चित कर सकें।

बाज़ार & सामाजिक अंतर

बाजार एवं मूल्य श्रृंखला से जुड़ी कमियाँ: सामूहिक संग्रहण की सीमित व्यवस्था, कमजोर सौदेबाजी क्षमता तथा मूल्यवर्धन के सीमित अवसर।

सामाजिक सुरक्षा: केवल 5 श्रमिक कार्ड होने की जानकारी मिली है; न्यूनतम मजदूरी एवं श्रम अधिकारों के बारे में जागरूकता सीमित है।

शिक्षा एवं पारिवारिक निरंतरता: पूर्व आधारभूत आकलन में 13 परिवारों में बच्चों के स्कूल छोड़ने तथा 3 परिवारों में अनियमित उपस्थिति की जानकारी मिली थी—वर्तमान स्थिति का सत्यापन आवश्यक है।

निदान में भूमि, बाजार, मजदूरी, संस्थाओं एवं सामाजिक सुरक्षा से जुड़ी परस्पर संबंधित कमजोरियों को चिन्हित किया गया है। किसी एक चुनौती को अलग-अलग संबोधित करना पर्याप्त नहीं होगा; इन सभी पहलुओं को एक-दूसरे से जोड़कर समग्र रूप से संबोधित करना आवश्यक है।

मुख्य चुनौतिया :
प्रवासन

प्रवासन समस्या नहीं है—समस्या आजीविका के सीमित विकल्प हैं।

25

प्रवासी

22

परिवार

4

प्रवास के गंतव्य क्षेत्र

प्रवासन: आकड़ो पर एक नज़र

8 लोग

घुसुरीपदर से प्रवासी पुरुष

17 महिलाएं

महिला प्रवासी — काम के लिए प्रवास करने वालों में बहुसंख्यक

प्रवास के गंतव्य क्षेत्र

बेंगलुरु · केरल · तमिलनाडु · आंध्र प्रदेश

कार्य का प्रकार

ईंट भट्ठे · प्लाईवुड से जुड़े कार्य · सिलाई-कढ़ाई

प्रवासन से होने वाली आय	स्थानीय मजदूरी
लगभग ₹500–600/ पर दिन	लगभग ₹200/ पर दिन

नकद आय की आवश्यकता वाले परिवारों के लिए **प्रवासन एक तर्कसंगत आर्थिक विकल्प हो सकता है**। इसलिए निदान केवल परिवारों से प्रवासन बंद करने की अपेक्षा करने के बजाय, उनके लिए स्थानीय स्तर पर बेहतर और अधिक भरोसेमंद आजीविका के विकल्प विकसित करने की आवश्यकता पर जोर देता है।

प्रवासन का लेंगिक स्वरूप

महिलाएँ आर्थिक भागीदार हैं—लेकिन उनके प्रवासन की कहानी को समझना आवश्यक है।

25 प्रवासियों में से 17 महिलाएँ हैं।

पूर्व आकलनों में सिलाई-कढ़ाई के काम के लिए महिलाओं के प्रवासन की जानकारी दर्ज की गई थी। उनकी अनुमानित आय **₹12,000–15,000 प्रति माह** थी, जिसमें से लगभग **₹8,000 घर भेजे जाने** की जानकारी मिली थी।

महिलाएं हैं :

श्रमिक · आय अर्जित करने वाली · प्रवासी · स्वयं सहायता समूह (SHG) की सदस्य · परिवार की आय में योगदानकर्ता

महत्वपूर्ण प्रश्न, जिनके उत्तर अभी स्पष्ट नहीं हैं

भर्ती की शर्तें · कार्यस्थल पर सुरक्षा · स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच · आय पर नियंत्रण · देखभाल संबंधी जिम्मेदारियाँ · प्रवासन की लागत · महिलाएँ स्वतंत्र रूप से प्रवास करती हैं या परिवार के साथ

मुख्य सन्देश

महिलाओं के प्रवासन को केवल **असुरक्षा** के रूप में नहीं, बल्कि **आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता** के रूप में भी समझना चाहिए—साथ ही, उन्हें होने वाले संभावित जोखिमों और सीमाओं को भी ध्यान में रखना आवश्यक है।

युवा: दोराहे पर खड़ी पीढ़ी

रुकें, खेती करें, सीखें—या प्रवास करें?

किसानो की उम्र 18–35

युवा पहले से ही गाँव की कृषि व्यवस्था का हिस्सा हैं।

प्रवासन से मिलने वाले अवसर

अधिक मजदूरी · अधिक निरंतर रोजगार · व्यापक श्रम बाजारों से परिचय

स्थानीय अर्थव्यवस्था से मिलने वाले अवसर

कृषि · पशुपालन · वन-आधारित आजीविका · स्वयं सहायता समूह (SHGs) · पारंपरिक ज्ञान
लेकिन वर्तमान में इनसे नियमित, भरोसेमंद और बेहतर आय वाले अवसर सीमित हैं।

जोखिम

यदि प्रवासन ही एकमात्र आकर्षक विकल्प बन जाता है, तो धीरे-धीरे गाँव से श्रमशक्ति, कौशल और पीढ़ियों के बीच ज्ञान एवं परंपराओं की निरंतरता कम हो सकती है। रिपोर्ट में पारंपरिक ज्ञान के संभावित क्षरण की चिंता को एक महत्वपूर्ण परिकल्पना माना गया है, जिसका फील्ड स्तर पर सत्यापन आवश्यक है।

व्यापक प्रभाव डालने वाली प्रमुख बाधा

स्थानीय अर्थव्यवस्था प्रवासन से मिलने वाली आय के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रही है।

जो पहले से मौजूद है

जमीन
कृषि + कृषि का ज्ञान

जंगल
NTFPs + पारंपरिक भोजन

पशुधन
बकरी + पोल्ट्री + गाय/ भेस इत्यादि

लोग
किसान + युवा + महिलए

सँस्थाए
SHGs + सामुदायिक सरचना

बाज़ार
Tइमली व्यापारी + आस पास के हाट

व्यवस्था कहाँ कमजोर पड़ती है

1. छोटी भूमिधारक
2. मोसमी खेती
3. स्थानीय स्तर पर कम आय
4. सिमित उधम विकास

प्रमुख बाधा

गाँव में आर्थिक संसाधन मौजूद हैं, लेकिन वे अभी तक इतने मजबूत तरीके से आपस में जुड़े नहीं हैं कि स्थानीय स्तर पर प्रतिस्पर्धी आय के अवसर पैदा कर सकें।

SLIDE 13

व्यवस्था-स्तरीय विफलता

प्रवासन अभी भी एक मजबूत आर्थिक विकल्प क्यों बना हुआ है?

1 **व्यवस्था 1 — कृषि**

मौजूद: भूमि + किसान + फसलें
कमी: छोटी भूमि जोत + पहाड़ी भू-भाग + मौसमी निर्भरता + सीमित विविधीकरण
परिणाम: कृषि पूरे वर्ष नियमित आय उपलब्ध नहीं करा पाती।

2 **व्यवस्था 2 — जंगल**

मौजूद: लघु वनोपज (NTFPs) + पारंपरिक खाद्य पदार्थ
कमी: सीमित प्रसंस्करण + सामूहिक संग्रहण + मूल्यवर्धन + बाजार तक पहुँच
परिणाम: इन संसाधनों का उपयोग मुख्यतः जीवन-निर्वाह तक ही सीमित रहता है।

3 **व्यवस्था 3 — पशुधन**

मौजूद: बकरी + मुर्गी पालन + पशुपालन संबंधी ज्ञान
कमी: कमजोर उद्यम-आधारित अर्थव्यवस्था + पशु चिकित्सा सेवाओं एवं बाजार व्यवस्था की कमी
परिणाम: पशुपालन से अभी तक प्रवासन से होने वाली आय की भरपाई नहीं हो पा रही है।

4 **व्यवस्था 4 — युवा**

मौजूद: युवा + कौशल
कमी: युवाओं की आकांक्षाओं के अनुरूप स्थानीय अवसरों एवं आजीविका के विकल्पों की कमी
परिणाम: प्रवासन अधिक आकर्षक विकल्प बन जाता है।

5 **व्यवस्था 5 — स्वयं सहायता समूह**

मौजूद: 2 स्वयं सहायता समूह (SHGs)
कमी: ऋण का उपयोग मुख्यतः घरेलू खर्च एवं कर्ज चुकाने में होता है, न कि उत्पादक उद्यमों के लिए।
परिणाम: सामूहिक क्षमता का अभी पर्याप्त उपयोग नहीं हो पा रहा है।

SLIDE 14

प्रवासन सर्किल

स्वयं को मजबूत करने वाली व्यवस्था

स्थानीय रोजगार के सीमित अवसर

कम आय वाली / मौसमी कृषि

कमज़ोर मूल्यवर्धन एवं बाजार से जुड़ाव

अपर्याप्त स्थानीय आय

युवा एवं श्रमिक प्रवास करते हैं

कम स्थानीय श्रम → कमजोर स्थानीय गतिविधियाँ

> चुनौती इस चक्र को तोड़ने की है—सिर्फ प्रवासन को रोकना इसका समाधान नहीं है।

घुसुरीपदर को किन चीज़ों की आवश्यकता है

वासन पर निर्भरता से आजीविका के विकल्पों की ओर

1

समझें

एक सत्यापित परिवार एवं प्रवासी प्रोफ़ाइल तैयार करें। कौन प्रवास करता है? कब प्रवास करता है? कहाँ जाता है? क्यों प्रवास करता है? प्रवासन की लागत कितनी है? वास्तव में घर पर कितनी आय पहुँचती है?

2

विकल्प बनाए रखें

व्यवहार्य स्थानीय विकल्पों का आकलन करें: कृषि, द्वितीयक फसलें, बकरी पालन, मुर्गी पालन, लघु वनोपज (NTFPs), इमली तथा स्वयं सहायता समूह (SHG) आधारित उद्यम।

3

आय में सुधार करें

विभिन्न आजीविका गतिविधियों में वास्तविक लागत, श्रम, जोखिम, बाजार मूल्य एवं शुद्ध आय का आकलन करें।

4

जोड़ें

उत्पादकों को **बाजार, खरीदारों, परिवहन, मूल्य संबंधी जानकारी एवं तकनीकी सहायता** से जोड़ें।

5

संगठित करें

मौजूदा **स्वयं सहायता समूहों (SHGs) और सामुदायिक संस्थाओं को मजबूत करें**, समानांतर संरचनाएँ बनाने के बजाय।

6

संरक्षण करें

श्रम कार्ड की कवरेज, **श्रम अधिकारों के प्रति जागरूकता, प्रवासन संबंधी जानकारी, सामाजिक सुरक्षा एवं प्रवासी श्रमिकों की सुरक्षा** को मजबूत करें।

स्थानीय मूल्य का निर्माण — मौजूदा संसाधनों से बेहतर आय की ओर

कृषि
फसल → द्वितीयक फसल → अधिक उत्पादक महीने → बेहतर शुद्ध आय

इमली
संग्रहण → सामूहिक संग्रहण → भंडारण → बेहतर मूल्य → समुदाय की अधिक आय

वन उत्पाद
लघु वनोपज (NTFP) → प्रसंस्करण / मूल्यवर्धन → बाजार → अधिक मूल्य का समुदाय के पास बने रहना

बकरी
पशुपालन → बेहतर देखभाल एवं प्रबंधन → पशु चिकित्सा सहायता → योजनाबद्ध बिक्री → बेहतर लाभ

मुर्गी पालन
घरेलू उत्पादन → बेहतर देखभाल एवं प्रबंधन → नियमित बिक्री → स्थानीय नकद आय

स्वयं सहायता समूह
बचत / ऋण → उद्यम → सामूहिक कार्रवाई → आय + महिलाओं की आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता

> लक्ष्य पूरी तरह से नई अर्थव्यवस्था का निर्माण करना नहीं है। बल्कि मौजूदा अर्थव्यवस्था को बेहतर तरीके से काम करने योग्य बनाना है।

स्थानीय मूल्य का निर्माण

मौजूदा संसाधनों से बेहतर आय की ओर

कृषि

फसल → द्वितीयक फसल → अधिक उत्पादक महीने → बेहतर शुद्ध आय

इमली

संग्रहण → सामूहिक संग्रहण → भंडारण → बेहतर मूल्य → समुदाय की अधिक आय

वन उत्पाद

लघु वनोपज (NTFP) → प्रसंस्करण / मूल्यवर्धन → बाजार → अधिक मूल्य का समुदाय के पास बने रहना

बकरी पालन

पशुपालन → बेहतर देखभाल एवं प्रबंधन → पशु चिकित्सा सहायता → योजनाबद्ध बिक्री → बेहतर लाभ

मुर्गी पालन

घरेलू उत्पादन → बेहतर देखभाल एवं प्रबंधन → नियमित बिक्री → स्थानीय नकद आय

स्वयं सहायता समूह (SHGs)

बचत / ऋण → उद्यम → सामूहिक कार्रवाई → आय + महिलाओं की आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता

> "The goal is not to create a completely new economy. It is to make the existing economy work better."

घुसुरिपदर

मजबूत संसाधन, कमजोर जुड़ाव

घुसुरिपदर पास क्या है

लोग
किसान • महिलाएँ • युवा • प्रवासी श्रमिक

जमीन
कृषि भूमि • पारंपरिक खेती

जंगल
भोजन • लघु वनोपज (NTFPs) • इमली

पशुधन
बकरी पालन • मुर्गी पालन • पशुधन

ज्ञान
पारंपरिक खाद्य पदार्थ • कृषि • वन संबंधी ज्ञान

सँस्थाए
स्वयं सहायता समूह (SHGs) • सामुदायिक संस्थाएँ

लेकिन इनके बीच जुड़ाव कमजोर है...

• भूमि हमेशा पर्याप्त आय में परिवर्तित नहीं हो पाती।
• वन संसाधन हमेशा बाजार मूल्य में परिवर्तित नहीं हो पाते।
• पशुधन से अभी तक नियमित एवं भरोसेमंद उद्यम आय सुनिश्चित नहीं हो पाती।
• स्वयं सहायता समूह (SHGs) अभी तक मजबूत उत्पादक संस्थाओं के रूप में विकसित नहीं हो पाए हैं।
• युवाओं के कौशल हमेशा स्थानीय रोजगार में परिवर्तित नहीं हो पाते।
• प्रवासन से होने वाली आय अपने आप आजीविका की सुरक्षा सुनिश्चित नहीं करती।

SLIDE 18

अगला कदम

प्रवासन पर निर्भरता से आजीविका के विकल्पों की ओर

1 **समझें**
परिवारों, प्रवासन और आजीविका की वास्तविक स्थिति का मानचित्रण करें।

2 **बनाए रखें**
व्यवहार्य स्थानीय आय के अवसरों की पहचान करें।

3 **प्रदर्शित करें**
द्विवितीयक फसलों, पशुपालन, लघु वनोपज (NTFPs), इमली तथा स्वयं सहायता समूह (SHG) आधारित उद्यमों का परीक्षण करें।

4 **संगठित करें**
मजबूत सामूहिक आर्थिक संस्थाओं का निर्माण करें।

5 **जोड़ें**
उत्पादकों को बाजार, खरीदारों, जानकारी एवं सेवाओं से जोड़ें।

6 **सुरक्षित करें**
श्रमिक अधिकारों एवं सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करें और सुरक्षित प्रवासन को बढ़ावा दें।

> "परिवार को प्रवासन इसलिए करना चाहिए क्योंकि वह इसे अपनी पसंद से चुनता है—न कि इसलिए कि उसके पास कोई व्यवहार्य विकल्प नहीं है।"

FINAL SLIDE

घुसुरिपदर

संसाधनों से समृद्ध गाँव — लेकिन बेहतर विकल्पों की आवश्यकता

गाँव में पहले से क्या मौजूद है

भूमि + वन + पशुधन + महिलाएँ + युवा + कौशल + स्वयं सहायता समूह (SHGs) + पारंपरिक ज्ञान

क्या कमी है

बाजार + उत्पादक सेवाओं + कौशल + ऋण + सामाजिक सुरक्षा + सामूहिक कार्रवाई से मजबूत जुड़ाव।

परिवर्तन की राह

संसाधन → संगठित करें → मूल्यवर्धन करें → जोड़ें → आय अर्जित करें → विकल्प चुनें

अंतिम लक्ष्य

- मजबूत स्थानीय आजीविकाएँ
- आय के अधिक विकल्प
- अधिक सुरक्षित एवं सूचित प्रवासन
- विकल्पों से सशक्त युवा
- अधिक आर्थिक निर्णय लेने की क्षमता वाली महिलाएँ
- अधिक सुदृढ़ घुसुरिपदर

"घुसुरिपदर को प्रवासन और विकास में से किसी एक को चुनने की आवश्यकता नहीं है; आवश्यकता इस बात की है कि उसके लोगों के लिए उपलब्ध विकल्पों का विस्तार किया जाए।"

Made with GAMMA

मुन्द्रूमुस्का

लोग, स्थान, आजीविका और पानी

मौसमी जल, स्थानीय ज्ञान और रोज़मर्रा के संघर्षों से आकार लेता एक गाँव

डुकुम ग्राम पंचायत | बिस्समकटक ब्लॉक | रायगढ़ा, ओडिशा | लगभग 30 परिवार

अवलोकन

मुन्द्रूमुस्का पर एक नज़र

समुदाय और स्थान

मुंद्रुमुस्का, डुकुम ग्राम पंचायत, बिस्समकटक ब्लॉक, रायगढ़ा, ओडिशा। लगभग 30 परिवार।

आजीविका और पानी

मुख्य आजीविका कृषि है, जिसमें रागी, मक्का, लोबिया, कंदुल और हल्दी जैसी पारंपरिक फसलों की खेती की जाती है।
पशुधन: बकरी, गाय, मुर्गी एवं भैंस पालन।
मौसमी प्रवासन: स्थानीय स्तर पर आजीविका के सीमित अवसरों के कारण आंध्र प्रदेश की ओर मौसमी प्रवासन होता है।
जल व्यवस्था: 2 नलकूप—जिनमें से 1 चालू है और 1 से कथित रूप से गंदा/मटमैला पानी आता है—साथ ही एक तालाब एवं प्राकृतिक मौसमी जल स्रोत उपलब्ध हैं। पहले की पाइपलाइन व्यवस्था कथित रूप से खराब हो गई थी और बाद में उसे हटा दिया गया।

लोग

मुन्द्रूमुस्का के लोग

लोग गाँव का सबसे मजबूत संसाधन हैं।

कृषि पर निर्भर परिवार

कृषि आजीविका का मुख्य आधार बनी हुई है। पारंपरिक फसल संबंधी ज्ञान परिवारों के खाद्य उत्पादन में सहायक है। जल की उपलब्धता सीधे तौर पर खेती की विश्वसनीयता को प्रभावित करती है।

महिलाएँ

महिलाएँ घरेलू जल संग्रहण का एक बड़ा हिस्सा संभालती हैं। उन्हें जल स्रोतों, मौसमी उपलब्धता और परिवार की जल आवश्यकताओं का विस्तृत ज्ञान है। एक व्यवहार्य जल व्यवस्था तैयार करने में उनका अनुभव महत्वपूर्ण है।

सामुदायिक संस्थाएँ

ग्राम समिति, स्वयं सहायता समूह (SHGs) और पंचायती राज संस्थाओं (PRI) के साथ जुड़ाव एक आधार प्रदान करते हैं। गाँव की समस्याओं के समाधान के लिए समुदाय में पहले से ही सामूहिक इच्छाशक्ति मौजूद है। पशुपालक बकरी, गाय, मुर्गी एवं 8 भैंसों का पालन करते हैं।

भौगोलिक परिदृश्य

भौगोलिक परिदृश्य रोज़मर्रा के जीवन को आकार देता है।

जल, कृषि और पहुँच एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं।

मुंद्रुमुस्का में नलकूपों, एक तालाब, एक ऊपरी प्राकृतिक जल स्रोत और एक निचले प्राकृतिक जल स्रोत का संयोजन उपयोग में आता है—इन सभी की जल उपलब्धता अलग-अलग मौसमों में अलग-अलग रहती है।

पानी

नलकूप, तालाब, ऊपरी एवं निचले प्राकृतिक जल स्रोत। मौसम के अनुसार परिवार अपनी जल आवश्यकताओं के लिए अलग-अलग स्रोतों पर निर्भर होते हैं।

कृषि

कृषि जल पर निर्भर है। बताया गया है कि सिंचाई की सुविधा केवल लगभग छह महीनों तक उपलब्ध रहती है। इसलिए जल असुरक्षा का सीधा प्रभाव कृषि उत्पादन और आय पर पड़ता है।

पशुधन

पशुधन भी इसी व्यापक जल व्यवस्था पर निर्भर है। जल की कमी के कारण गाँव में उपलब्ध सीमित जल संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है।

मोसमी पहुच

ऊपरी जल स्रोत वर्षा ऋतु में अधिक उपयोगी होता है। गर्मी के मौसम में निचला जल स्रोत अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। यही भौगोलिक परिदृश्य कृषि को बनाए रखने के साथ-साथ मौसमी जल असुरक्षा को भी बढ़ाता है।

इतिहास

पानी के साथ जीवन की एक कहानी

1 पहले गाँव का जीवन

प्राकृतिक जन श्रोतो. तालाब और मोसमी उपलब्धता पर निर्भरता। कृषि और स्थानीय आजीविका इसी पेटर्न से तय होती थी।

2 जल आपूर्ति का हस्तक्षेप

An पहले एक पाइपलाइन और जल – आपूर्ति व्यवस्था शुरू की गई थी। यह व्यवस्था आखिर में काम करना बंद हो गई और इसे हटा दिया गया।

3 आज की स्थिति

दो ट्यूबवेल – पीने के लिए सिर्फ एक ही काम कर रहा है। मोसमी प्राकृतिक जल श्रोत है। एक तालाब है जिसका पानी गन्दा रहता है। गर्मी में उबलब्ध जल श्रोतो पर ज्यादा दबाव रहता है।
पैटर्न : पहुँच – बुनयादी ढाचा – विफलता – जुगाड़ - मोसमी संकट – स्थायी जल सुरक्षा की जरूरत है।

इतिहास में अंतराल

गाँव की स्थापना, मूल बसावट और प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओ के बारे में प्रयाप्त साबुत डायगनोस्टिक उपलब्ध नहीं है और इसे बुजुर्गो के साथ मौखिक इतिहास के माध्यम से दर्ज किया जाना चाहिए।

Made with GAMMA

आजीविका

कृषि , भोजन और आजीविका

पारंपरिक फासले

- मिलेट
- बाजरा
- लोबिया/ चोला
- कंदुला
- हल्दी

पशुधन

- बकरी
- गाय बैल
- मुर्गी पालन
- भैस

मोसमी पलायन

स्थानीय स्तर पर आजीविका के सीमित अवसरों के कारण लोगो को मोसमी करना पड़ता है, जिसमे आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिला में जाना भी शामिल है।

श्रखला

पानी → कृषि उत्पादन → खाना → आय → परिवार की रेलिंगेस

यह क्यों महत्वपूर्ण

कृषि की यहाँ की मुख्य आजीविका है। सिचाई की सुविधा साल के सीएफ कुछ हिस्से में ही उपलब्ध है। जब पानी अविश्वनीय हो जाता है, तो इसका असर खाद्य सुरक्षा, आय और परिवार की खुशहाली पर भी पड़ता है। इसीलिए जल असुरक्षा सिर्फ पीने के पानी की समस्या नहीं है।

संसाधन

मुन्द्रूमुस्का के संसाधन मानचित्र

पानी के संसाधन

एक चालू ट्यूबबेल, दूसरा ट्यूबबेल, तालाब, ऊपर और नीचे के प्राक्रतिक जल श्रोत,- अगर इन्हें जोड़ा और सही से प्रबधित किया जाए तो यह एक मजबूत आधार है।

लोग और ज्ञान

खेती का ज्ञान, पारंपरिक फसलो का ज्ञान, जल श्रोतो के विषय में महिलाओ को विस्तृत ज्ञान और मोसमी जल संकट का सामुदायिक अनुभव।

संगठित क्षमता और आजीविका

ग्राम समिति, स्वयं सहायता समूह, पंचायती राज संस्थाओ से संपर्क, समुदाय की इच्क्षशक्ति, कृषि, पशुधन, पारंपरिक फसले और आंशिक सिचाई – ये सभी मोजूद बुनियादी आधार है।

> " चुनौती सब कुछ बहार से बनाने की नहीं है – बल्कि जो पहले से मोजूद है, उसे जोड़ने, मजबूत करने और प्रंबधित करने की है।"

जल श्रोतो वाला गाँव — लेकिन भरोसेमंद जल सुरक्षा के बिना

बड़ी कहानी

पानी → भोजन → खेती → आजीविका → स्वास्थ्य → देखभाल → सम्मान
जल असुरक्षा सिर्फ पानी पीने के पानी की समस्या नहीं है।

स्थान : दुकुम ग्राम पंचायत ,बिसम कट्टक ब्लाक, रायागढ़ा , उड़ीसा
पैमाना : 30 परिवार

अगला कदम

बुजुर्गो के साथ बैठ कर गाँव की स्थापना और बसावट के मोखिक इतिहास को दर्ज करना। साल भर में मोसमी श्रोतो के प्रदर्शन का मानचित्र बनाना। एक व्यावहारिक जल – प्रबधन प्रणाली को डिजाईन करने में महिलाओ के ज्ञान को शामिल करना। एक मजबूत व्यवस्था की नीव के रूप में ग्राम समिति, स्वयं सहायता समूह, और पंचायती राज संस्थाओ के साथ समन्वय को सक्रीय करना।

यह निदान मुन्द्रमुसका मे स्थायी जल सुरक्षा के निर्माण के लिए चालू ट्यूबबेल, प्राक्रतिक श्रोतो, समुदयु की इच्छाशक्ति , ग्राम समिति, स्वयं सहायता समूहों और पंचायत राज संपर्क को नीव के रूप में पहचानता है।

पानी के अलावा अन्य चुनौतिया

जल केन्द्रीय चुनौती है – लेकिन यह अन्य असुरक्षाओ से जुडी हुई है

01 — आजीविका और आय

कृषि मुख्य आजीविका है इ स्थानीय अवसरों की कमी मोसमी पलायन का कारण बनती है। जल की कमी कृषि उत्पादकता और आय को प्रभावित कर सकती है।

02 — मौसमी कृषि

बताया जाता है की सिचाई केवल लगभग 6 महीने के लिए उपलब्ध है। पानी की कमी वाले समय में खेती और अधिक असुरक्षित हो जाती है।

03 — खाद्य सुरक्षा

पारंपरिक फसले एक महत्वपूर्ण संसाधन हैं। मौसमी जल उपलब्धता खाद्य उत्पादन और परिवार के लचीलेपन को प्रभावित कर सकती है।

04 — पशुधन

पशुधन उसी जल पर्यावरण पर निर्भर है। कमी से घरेलू जल प्रबन्धन पर अतिरिक्त दबाव बनता है।

05 — स्वास्थ्य , स्वच्छता और गरिमा

पानी न केवल पिने के लिए बल्कि बजने, सफाई, स्वच्छता और मासिक धर्म देखभाल के लिए भी जरूरी है। महिलाएँ मासिक ड्रम के दौरान अतिरिक्त प्रतीबंधो की बात बताती हैं।

06 — क्क्म्जोर संस्थागत प्रतिक्रिया

समुदाय की चिंताए उठाई जाती है लेकिन शिकायत → तकनीकी प्रतिक्रिया → मरम्मत →फॉलो अप → जवाबदेही तक का रास्ता कमजोर या अस्पस्ट बना हुआ है।

सामान्य कड़ी : मोसमीता + सिमित आजीविका के अवसर + कमजोर सेवा प्रतिक्रिया → परिवार की अधिक असुरक्षा

प्रमुख चुनौतिया

जल असुरक्षा

ा गाँव की सबसे बड़ी और बार- बार सामने आने वाली सामुदायिक चिंता – दो ट्यूब बेल मोजूद है – पिने के लिए सिर्फ एक ही काम कर रहा है।

समस्या सिर्फ “पानी नहीं है “ इतनी नहीं है

येह भरोसमंदता की समस्या है। पानी किसी खास समय या जगह पर उपलब्ध हो सकता है, लेकिन परिवारों के पास साल भर के लिए भार्सोमंद , सुरक्षित और सुविधाजनक श्रोत नहीं है।

2

ट्यूब बेल

1पीने के लिए 1 ही काम कर रहा है।

≈6

महिने

मोसमी जल संकट

6–8

बाल्टी /दिन

परिवारों द्वारा बताया गया संग्रह : 3–4 सुबह + 3–4 शाम

जल असुरक्षा

पानी के रोजमर्रा की कीमत

पानी की कमी समय , दुरी, इंतजार, और असमान पहुँच में बदल जाती है।

⏱ समय

सुबह 3–4 बार और शाम को 3 – 4 बार बाल्टी लाने जाना पड़ता है। क्गेती , बच्चो की देखभाल, पशुओ की देखभाल, और घर के कामो से समय निकल जाता है।

📍 दूरी

लोग मोसमी श्रोतो के बीच आते –जाते है और साफ़ पानी के लिए ज्यादा दूर तक चलना पपड़ता है – यह ज्यादा शारीरिक बोझ है, खासकर महिलाओ के लिए।

⌛ इंतजार

चालू श्रोतो के आस पास कतारें लग जाती है। काम करने वाले श्रोत कम होने से भीड़ और रोजाना घंटो की बर्बादी होती है।

💧 गुणवत्ता

कुछ श्रोतो का पानी गन्दा है या पीने योग्य नहीं माना जाता गुणवता के बिना सिर्फ मात्रा से जल सुरक्षा नहीं आती है।

🌞 गर्मी

लगभग 6 महीनो तक पानी की कमी और नहाने – धोने में कठिनाई बनी रहती हिया। यह संकट पहले से पता चलने वाला है – फिर भी व्यवस्था इसके लिए तैयार नहीं हिया।

पानी , महिलाए और लडकियाँ

स्वास्थ्य, सुरक्षा, सम्मान और अधिकारों का सवाल

जल असुरक्षा का अनुभव सभी के लिए एक जैसा नहीं होता है। महिलाओ ने बताया कि मासिक धर्म के दौरान उन्हें :

आमतोर पर इस्तमाल होने वेक जल श्रोतो उपयोग करने से रोका जा सकता है .

एक अलग जल श्रोत का उपयोग करने के लिए कहा जाता है – जो कथित तौर पर गंदा है और जानवर भी उसका उपयोग करते है।

यह क्यों महत्वपूर्ण है

मासिक धर्म स्वक्षता के लिए सफाई, स्नान और व्यक्तिगत स्वच्छता के लिए सुरक्षित पानी तक पहुँच जरूरी है। जब महिलाए और लडकिय मासिक धर्म के दौरान सुरक्षित श्रोत तक नहीं पहुँच पति , तो उन्हें इन समस्याओ का सामना करना पड़ता है।

1. असुरक्षित स्वच्छता
2. स्वास्थ्य और संक्रमण का खतरा
3. निजता और सम्मान की हानि
4. असमान पहुँच

मुख्य सन्देश : किसी भी जल व्यवस्था को पूरी तरह से कार्यशील नहीं माना जा सकता अगर महिलाएँ और लडकिय मासिक धर्म स्वच्छता के लिए उसका सुरक्षित और सम्मान रूप से उपयोग नहीं कर पा रही है। यह सिर्फ बुनियादी ढाचे का मामला नहीं है, बल्कि लेगिक समानता, सुरक्षा और सम्मान का मामला है।

निदान

बाधाएँ — जल व्यवस्था कहा अटकी हुई है ?

1

मोसमी प्रभाव

गर्मी के मोसम में प्राकर्तिक जल श्रोत अविश्वनीय हो जाते है।

2

बुनियादी ढाचा

दो ट्यूबबेल मोजूद हैं – लेकिन वर्तमान में केवल एक ही पिने योग्य है।

3

रख रखाव

पहले की पाइपलाइन खराब हो गयी और हटा दी गई। निवारण रख - रखाव ।को कौन सुनिचित करता है ?

4

पानी गुणवत्ता

समुदाय के लोग खराब गुणवत्ता वाले श्रोतो की पह्चंतो करते है, लेकिन नियमित रूप से दस्तावेजीकृत गुणवत्ता परीक्षण की वव्यवस्था अभी तक स्थापित नहीं हुई हैं।

5

मोसमी योजना

समुदाय जनता है की गर्मी मुश्किल होती है, लेकिन व्यवस्था अनुमानित मोसमी तनाव के लिए तैयारी करने के बजाय केवल कमी होने पर प्रतिक्रिया देती है।

6

निगरानी और जवाबदेही

गाँव की समिति और स्वयं सहायता समूह मोजूद हैं, लेकिन नियमित निगरानी और शिकायत निवारण में भूमिकाएं स्पस्ट रूप से परिभाषित नहीं हैं। शिकायत → मरम्त → फालो अप की श्रंखला कमजोर बनी हुई हैं।

7

लैंगिक

महिलाएँ पानी भरने का अधिकांश बोझ उठाती है और मासिक धर्म के दौरान पानी तक पहुँच में पाबंदीयो का सामना करती हैं।

व्यवस्थागत विफलता

समस्या एक खराब ट्यूब बेल से कही बड़ी है

क्या मोजूद है

- ट्यूबबेल, तालाब और प्राकर्तिक जल श्रोत
- ग्राम समिति और स्वयं सहायता समूह
- पंचायती राज संस्था
- सामुदायिक का ज्ञान और अनुभव

लेकिन कडियाँ कमजोर है

1. मोसमी श्रोत + सिमित बुनियादी ढाचा
2. गर्मी में जल संकट ⟶ श्रोत बदलना + लंबी कतारे
3. महिलाओं पर असमान रूप से अधिक बोझ
4. गुणवत्ता + सम्मान से जुड़ी चिंताए
5. कमजोर रख – रखाव + निगरानी + जवाबदेही
6. विफलता दोहराती है — प्रत्येक गर्मी में वही संकट लोट आता है

मूल कारण

जल असुरक्षा क्यों बनी हुई हैं ?

1 स्तर 1 — द्रश्यमान समस्या

पुरे साल के लिए कोई भरोसेमंद, सुरक्षित और सुविधाजनक पेयजल उपलब्ध नहीं हैं।

2 स्तर 2 — तात्कालिक कारण

मोसमी श्रोत, सिमित जल उत्पादन, एक अनुपयोगी ट्यूबबेल, विफल पाइपलाइन।

3 स्तर 3 — व्यवस्थागत कमियाँ

कमजोर निवारक योजना,जल गुणवत्ता आश्वासन की कमी, अस्पष्ट निगरानी व्यवस्था, कमजोर शिकायत निवारण प्रणाली।

4 स्तर 4 — सरचनात्मक मुद्दे

अप्रयाप्त मोसमी योजना, अस्पस्ट संस्थागत जवाबदेही, कमजोर अभिसरण (विभागों के बीच समन्वय), पहुँच निवारण प्रणाली। .

परिणाम : गर्मी का संकट →पानी भरने में अधिक समय → समय की बर्बादी → स्वास्थ्य और सम्मान से जुडी चिंताए → आजीविका पर प्रभाव → बार - बार की असुरक्षा। जो कड़ी गायब है , वह है – श्रोत, बुनियादी ढाँचा, रख – रखाव , गुणवत्ता, मोसमी योजना, सामुदायिक निगरानी, लेगिक समानता वाली पहुँच और संस्थागत जवाबदेही के बीच का जुड़ाव।

सिफ़ारिशे

मुन्द्रूमुस्का को क्या चाहिए — जल की पहुँच से जल की सुरक्षा तक

1 सुरक्षित करे

Pकाम कर रहे ट्यूबबेल को सुरक्षित रखे। तकनीकी रूप से जाच करे की क्या दुसरे ट्यूबबेल को सुरक्षित रूप से फिर से चालू किया जा सकता है।

2 मानचित्र

सभी जल श्रोतो का मानचित्र करें - उनका स्थान, दूरी, मोसमी उपलब्धता, उत्पादन क्षमता और गुणवत्ता।

3 निगरानी करे

नियमित जल गुणवत्ता परीक्षण, शर्त की स्थिति का रिकॉर्ड, रख रखाव की ट्रैकिंग और एक स्पष्ठ शिकायत निवारण तंत्र स्थापित करें।

4 शासन तय करें

समुदाय, महिलाओं, स्वयं सहायता समूहों, ग्राम समिति, पंचायती राज संस्था और सम्बंधित विभागों की भूमिकाए स्पष्ठ रूप से तय करें।

5 समानता सुनिचित करे

सुनिचित करे की महिलाओ और लडकियों की सुरक्षित, गरिमापूर्ण और समान पहुँच हो – जिसमे मासिक धर्म के दौरान भी शामिल हैं ।

6 बोझ कम करे

बार – बार पानी भरने के लिए जाना न पड़े, इसके लिए उचित भण्डारण और वितरण समाधानों पर विचार करें।

7 आजीविका से जोड़े

समझे की उत्पादक जल (खेती के लिए पानी) किस प्रकार खेती, खाद्य सुरक्षा, पशुधन और घरेलु आय में सहयोग कर सकता है – बिना पेयजल की जरूरतों से समझोता किए ।

समझे → सुरक्षित करे → निगरानी करे → शासन तय करे → समानता सुनिचित करे → बोझ कम करे → जल सुरक्षा को बढाए

मुन्द्रमुस्का की कहानी

एक ऐसा गाँव जिसके पास जल श्रोत है – लेकिन जल सुरक्षा नहीं है

मुन्द्रमुस्का के पास क्या है :

लोग

सामुदायिक ज्ञान, महिलाएँ, किसान और पशुपालक।

भूमि और संसाधन

प्राकर्तिक श्रोत, तालाब, कृषि और पारंपरिक फसले।

बुनियादी ढाचा और सँस्थाए

ट्यूबबेल, पहले की पाइपलाइन, ग्राम समिति, स्वयं सहायता समूह, पंचायती राज संस्था के संपर्क।

लेकिन कुछ कड़ियाँ कमजोर है

- जल श्रोतो को होना हमेशा के लिए भरोसेमंद पानी बनना नहीं होता है।
- बुनियादी ढाँचा का होना हमेशा निरंतर सेवा बनना नही होता।
- शिकायत का होना हमेसा स्थायी समाधान बनना नहीं होता।
- जल तक पहुँच का होना हमेशा सामान पहुँच बनना नहीं होता।
- एक चालू श्रोत का होना अपने आप सुरक्षित मासिक धर्म स्वच्छता तक पहुँच नहीं बन जाता।
- कृषि के लिए पानी का होना हमेसा आजीविका सुरक्षा नहीं बन जाता।

अगला कदम

असुरक्षा से जल सुरक्षा की ओर

01

समझे

प्रत्येक श्रोत, प्रत्येक मोसम, प्रत्येक उपयोगकर्ता और उनके बोझ को समझे

02

सुरक्षित करे

पुरे वर्ष के लिए भरोसेमंद और सुरक्षित जल की व्यवस्था बनाएं।

03

निगरानी करे

श्रोत की कार्य क्षमता, गुणवत्ता और मोसमी तनाव पर नज़र रखे।

04

जवाबदेही

मरम्त, रख – रखाव, और फालो अप की जिम्मेदारी को स्पष्ठ और द्रश्यमान बनाएं।

05

समानता की सुरक्षता

महिलाओं और लडकियों की सुरक्षा, गरिमा,और मासिक धर्म स्वास्थ्य को जल योजना के केंद्र में रखे।

06

बोझ कम करे

दुरी, इंतजार और बार – बार पानी बहरने की प्रक्रिया को कम करे।

07

आजीविका को महबूत करें

जल सुरक्षा का उपयोग कृषि, खाद्य सुरक्षा और घरेलू लचीलापन को मजबूत करने के करे।

मुन्द्रूमुस्का की चुनौती

चुनौती सिर्फ पानी का न होना नहीं हैं। चुनौती एक भरोसेमंद व्यवस्था का न होना है, जो जल श्रोतो, बुनियादी ढांचे , रख – रखाव, गुणवत्ता, मौसमी योजना, सामुदायिक भागीदारी, लेंगिक समानता और संस्थागत जवाबदेही को आपस में जोड़े।

प्राथमिकता सिर्फ एक और जल सम्पति जोड़ना नहीं है। प्राथमिकता एक ऐसी जल प्रबधन प्रणाली बनना है जो काम करे – खासकर साल के सबसे कठिन महीनो में और प्रत्येक महिला, प्रत्येक लड़की और प्रत्येक घर के लिए।

> निदान यह निष्कर्ष डेटा हिया कि मुन्द्रूमुस्का को "शिकायत- और मरम्त" वाले दृष्टिकोण से हटकर जल सुरक्षा वाले दृष्टिकोण की ओर बढना होंगा ताकि गाँव को प्रत्येक गर्मी में वही संकट दोबारा न झेलना पड़े।

जल सुरक्षा → स्वास्थ्य और सम्मान → खाद्य सुरक्षा → आजीविका → एक अधिक लचीला मुन्द्रूमुस्का

अपने गांव के परिचायक को जानें

मजबूत
यात्राएँ
साथ मिलकर

वे लोग जो हमारी बात सुनने, सीखने और गांव में आगे बढ़ने का रास्ता खोजने में मदद करते हैं।

गांव परिचायक 01
उमा शंकर काद्रका
गांव – खांबसी
बिसम कटक, रायगड़ा

गांव परिचायक 02
बिनोद कुलैसिका
गांव – मुंदरमुस्का
बिसम कटक, रायगड़ा

लोग
स्थान
संवाद
परिवर्तन

सम्मान
समझ
साझा करें
सीखें

गांव परिचायक 03
रबी वाडका
गांव – गारतोली
बिसम कटक, रायगड़ा

गांव परिचायक 04
नारायण प्रतिका
गांव – घुसुरीपदार
बिसम कटक, रायगड़ा

पहले सुनें, फिर सीखें – समुदाय के साथ!

रायगड़ा चैलेंज लैब

उमा शंकर कड़रका

खाम्बेसी, बिस्समकटक, रायगड़ा

गाँव के एक युवा आवाज़

सुनना। लोगों को संगठित करना। स्थानीय ताकतों को कार्रवाई में बदलना।

शिक्षा

+3 विज्ञान

भूमिका

ग्राम एंकर, आत्मशक्ति ट्रस्ट

समुदाय

खाम्बेसी / नियमगिरि परिदृश्य

ताकत

संचार एवं युवाओं की भागीदारी

"यदि मैं अपने गाँव के लिए काम करूँ और उसके लक्ष्यों को हासिल करने में योगदान दूँ, तो मैं एक सार्थक बदलाव ला सकता हूँ।"

चुनौती	वे क्या लेकर आते हैं	वे क्या करने के लिए तैयार हैं
कृषि, संस्कृति, युवाओं और स्थानीय अवसरों में मौजूद गाँव की ताकतें सामूहिक कार्रवाई और दिखाई देने वाले सामुदायिक बदलाव में कैसे बदल सकती हैं?	डोंगरिया कोंध समुदाय के सदस्य के रूप में गहरी स्थानीय जड़ें, डीकेडीए के साथ काम करने का अनुभव, गैर-सरकारी संगठनों के साथ कार्य-अनुभव, स्वयंसेवी अनुभव और विभिन्न लोगों के साथ मजबूत संवाद क्षमता।	युवाओं के साथ संवाद बनाना, समुदाय की प्राथमिकताओं को सुनना, मौजूदा संस्थाओं और अवसरों के साथ काम करना तथा स्थानीय विचारों को व्यावहारिक कार्रवाई में बदलने में सहयोग करना।

उनकी यात्रा

जड़ें

नियमगिरि परिदृश्य में जन्मे और डोंगरिया कोंध—विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)—समुदाय का हिस्सा हैं।

अनुभव

डीकेडीए के साथ निकटता से काम करते हैं और झाना जागड़ मंच के साथ स्वयंसेवक के रूप में जागरूकता, सरकारी योजनाओं तक पहुँच तथा सामुदायिक विकास में सहयोग कर चुके हैं।

लैब में प्रवेश

एक गाँव की बैठक के माध्यम से आत्मशक्ति ट्रस्ट से जुड़े और ग्राम एंकर की भूमिका निभाई।
साथ ही, समुदाय की परिस्थितियों में सुधार के लिए योगदान देने हेतु डीकेडीए के साथ भी काम कर रहे हैं।

प्रेरणा

कृषि, युवाओं की भागीदारी, संस्कृति, आजीविका और सामुदायिक विकास में योगदान देना चाहते हैं।

यात्रा और अनुभव

नियमगिरि में जड़ें

उमा शंकर नियमगिरि परिदृश्य के डोंगरिया कोंध समुदाय से आते हैं। भूमि, संस्कृति, कृषि और समुदाय की रोज़मर्रा की वास्तविकताओं से उनका जुड़ाव इस बात को आकार देता है कि वे बदलाव को किस तरह देखते हैं।

स्वयंसेवा से कार्रवाई तक

आत्मशक्ति ट्रस्ट से जुड़ने से पहले उन्होंने गैर-सरकारी संगठनों के साथ काम किया और जन जागरण मंच के साथ स्वयंसेवक के रूप में लोगों को सरकारी योजनाओं, सेवाओं और अवसरों को समझने में मदद की।

समुदाय के भीतर से काम

वे डीकेडीए के साथ भी काम कर रहे हैं और डोंगरिया कोंध समुदाय की स्थिति में सुधार के प्रयासों में योगदान दे रहे हैं। उनका कार्य अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ के भीतर से बदलाव लाने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

ग्राम एंकर बनना

वे एक गाँव की बैठक के माध्यम से आत्मशक्ति ट्रस्ट से जुड़े और ग्राम एंकर की भूमिका संभाली। आज वे युवाओं को प्रेरित करने, समुदाय की प्राथमिकताओं को सामने लाने और स्थानीय आकांक्षाओं को सामूहिक कार्रवाई से जोड़ने के लिए काम करते हैं।

उन्हें क्या प्रेरित करता है

उमा शंकर के लिए सार्थक विकास की शुरुआत गाँव में पहले से मौजूद ताकतों—लोगों, ज्ञान, संस्कृति, कृषि और युवाओं—से होती है। वे इन ताकतों को अवसरों और दीर्घकालिक सामुदायिक प्रभाव में बदलना चाहते हैं।

"अपने गाँव के लिए काम करना और उसके लक्ष्यों में योगदान देना ही वह तरीका है, जिससे मैं एक सार्थक बदलाव ला सकता हूँ।"

रायगड़ा चैलेंज लैब

बिनोद कुलेसिका

मुंद्रुमुस्का, बिस्समकटक, रायगड़ा

एक युवा ग्राम एंकर

गाँव में बदलाव को देखने से लेकर बदलाव लाने में योगदान देने तक।

शिक्षा	भूमिका
10वीं	ग्राम एंकर
गाँव	**केंद्रित क्षेत्र**
मुंद्रुमुस्का	पेयजल सुरक्षा

“मैं वास्तव में अपने गाँव में बदलाव देखना चाहता था।”

गाँव की चुनौती	उन्होंने क्या अनुभव किया है	वे क्या बदलने के लिए प्रेरित हैं
बिनोद ने अपने गाँव में उपलब्ध पानी की गुणवत्ता में बदलाव देखा है। उनके लिए यह एक सामुदायिक चिंता है, जिस पर सामूहिक ध्यान और कार्रवाई आवश्यक है।	उन्होंने देखा है कि जब किसी स्थानीय मुद्दे को मिलकर संबोधित किया जाता है तो लोग कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। इससे लोगों की ओर से बोलने के बजाय उनके साथ काम करने में उनका विश्वास मजबूत हुआ है।	बिनोद अपने गाँव में स्पष्ट सुधार देखना चाहते हैं। उनकी शुरुआत सरल है: लोगों की बात सुनना, स्थानीय रूप से महत्वपूर्ण बातों को समझना और बदलाव के लिए मिलकर काम करना।

उनकी यात्रा

जड़ें

बिनोद बिस्समकटक ब्लॉक के डुकाम स्थित मुंद्रुमुस्का गाँव से जुड़े हैं। वे कोंध समुदाय से हैं। बदलाव की उनकी समझ रोज़मर्रा की सामुदायिक वास्तविकताओं से शुरू होती है।

बदलाव देखने की इच्छा

वे अपने गाँव में वास्तविक सुधार देखना चाहते हैं और यह सोचते हैं कि वे इसमें किस तरह योगदान दे सकते हैं।

कार्रवाई से सीखना

उनके अनुभव ने दिखाया है कि जब लोग किसी स्थानीय मुद्दे पर एक साथ आते हैं, तो सकारात्मक बदलाव दिखाई देता है और लोग उसका हिस्सा महसूस करते हैं।

ग्राम एंकर बनना

ग्राम एंकर के रूप में वे लोगों की बात सुनने, भागीदारी को प्रोत्साहित करने और समुदाय को उसकी प्राथमिकताओं पर काम करने में सहयोग देने की अधिक सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

व्यक्तिगत चिंता से सामूहिक कार्रवाई तक

बिनोद की कहानी स्थानीय नेतृत्व की शुरुआत की कहानी है। वे अपने अनुभव से जुड़ी एक चिंता, लोगों के साथ काम करने की इच्छा और अपने गाँव को बेहतर होते देखने का संकल्प लेकर आगे बढ़ रहे हैं।

व्यवहार में उनका अनुभव

- गाँव में पानी की गुणवत्ता में बदलाव और उस पर समुदाय की प्रतिक्रिया को देखा है।
- गाँव की चिंता को मिलकर संबोधित करने और लोगों की सकारात्मक प्रतिक्रिया का महत्व अनुभव किया है।
- मानते हैं कि स्थानीय बदलाव तब अधिक मजबूत होता है जब लोग भाग लेते हैं और साथ मिलकर काम करते हैं।
- इस अनुभव को समुदाय के नेतृत्व में समस्या-समाधान की व्यापक प्रक्रिया में बदलना चाहते हैं।

“हमें लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।”

रायगड़ा चैलेंज लैब

नारा प्रतिका

घुसुरिपदर, बिस्समकटक, रायगड़ा

एक गाँव का स्वयंसेवक, जो भागीदारी को कार्रवाई में बदल रहा है

गाँव से जुड़ा हुआ। बदलाव के लिए लोगों के साथ काम करने को तैयार।

शिक्षा

12वीं (उच्च माध्यमिक)

भूमिका

ग्राम एंकर / स्वयंसेवक

गाँव

घुसुरिपदर

केंद्रित क्षेत्र

सामुदायिक भागीदारी एवं स्थानीय बदलाव

"मैं इस गाँव के लोगों का बहुत आभारी हूँ।"

गाँव की वास्तविकता	उन्होंने क्या अनुभव किया है	वे क्या बदलना चाहते हैं
नारा ने अपने गाँव में उपलब्ध पानी की गुणवत्ता में बदलाव देखा है। इस बदलाव ने उनके लिए एक स्थानीय चिंता को स्पष्ट किया और कार्रवाई करने का कारण बनाया।	स्वयंसेवा और गाँव-स्तरीय कार्य के माध्यम से उन्होंने देखा है कि जब किसी मुद्दे को लोगों के साथ और समुदाय के लिए मिलकर संबोधित किया जाता है, तो सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है।	नारा घुसुरिपदर में सार्थक सुधार देखना चाहते हैं। उनका तरीका है—सुनना, लोगों को शामिल करना और रोज़मर्रा के गाँव के जीवन को प्रभावित करने वाली चिंताओं पर मिलकर काम करना।

उनकी यात्रा

घुसुरिपदर में जड़ें

नारा बिस्समकटक ब्लॉक के घुसुरिपदर गाँव से हैं और गाँव में स्थानीय स्वयंसेवक के रूप में काम करते हैं।

दैनिक काम से सामुदायिक कार्य तक

मज़दूर के रूप में काम करने के साथ-साथ उन्होंने गाँव के लिए अपना समय और ऊर्जा देने तथा स्थानीय चिंताओं पर लोगों के साथ जुड़ने का निर्णय लिया है।

बदलाव की आवश्यकता को देखना

गाँव में पानी की गुणवत्ता में बदलाव और समुदाय की प्रतिक्रिया ने स्थानीय मुद्दों को समझने तथा व्यावहारिक समाधान खोजने में मदद करने की उनकी इच्छा को मजबूत किया है।

ग्राम एंकर बनना

ग्राम एंकर के रूप में वे अब व्यापक भूमिका निभा रहे हैं—लोगों की बात सुनना, भागीदारी को प्रोत्साहित करना और समुदाय को दिखाई देने वाले बदलाव के लिए मिलकर काम करने में सहयोग देना।

गाँव के अनुभव से सामूहिक कार्रवाई तक

नारा चैलेंज लैब में एक सरल लेकिन महत्वपूर्ण ताकत लेकर आते हैं: वे गाँव को भीतर से जानते हैं। एक कामगार और स्वयंसेवक के रूप में उनका अनुभव उन्हें रोज़मर्रा की वास्तविकताओं के करीब रखता है, जबकि एंकर की भूमिका उन्हें उन मुद्दों पर लोगों को साथ लाने का अवसर देती है जिनमें बदलाव की आवश्यकता है।

उनका अनुभव क्या दिखाता है

- रोज़मर्रा के गाँव के जीवन के माध्यम से स्थानीय चिंताओं को समझते हैं।
- समुदाय के सदस्यों के साथ सीधे काम करने के महत्व का अनुभव किया है।
- पानी और गाँव की अन्य बुनियादी चिंताओं को साझा मुद्दे मानते हैं, जिन पर सामूहिक ध्यान आवश्यक है।
- भागीदारी को मजबूत करना चाहते हैं ताकि लोग बदलाव को परिभाषित करने और उसे साकार करने का हिस्सा बनें।

"हमें लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए।"

रायगड़ा चैलेंज लैब

रबी वाडका

गर्तोली, बिस्समकटक, रायगड़ा

एक युवा आदिवासी ग्राम एंकर

समुदाय से गहराई से जुड़ा। प्रतिबद्धता को बदलाव में बदलने के लिए तैयार।

शिक्षा

उच्च माध्यमिक (12वीं – कला)

भूमिका

ग्राम एंकर

समुदाय

कोंध समुदाय

प्रतिबद्धता

समुदाय-नेतृत्व वाला बदलाव

“मैं अपने समुदाय में सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान देना चाहता हूँ।”

समुदाय में जड़ें	बदलाव के प्रति प्रतिबद्धता	भागीदारी के लिए तैयार
रबी खाम्बेसी के कोंध समुदाय से आने वाले एक युवा हैं। उनकी पहचान और गाँव के जीवन से उनका जुड़ाव इस बात का आधार है कि वे अपने समुदाय के भविष्य को किस तरह देखते हैं।	अपने आसपास सुधार देखने की मजबूत इच्छा के साथ रबी ग्राम एंकर के रूप में आगे आए हैं और सकारात्मक सामुदायिक बदलाव के लिए काम करने की प्रतिबद्धता जताई है।	उनकी भूमिका लोगों के बीच उपस्थित रहने, उनकी बात सुनने, भागीदारी बढ़ाने और समुदाय के विचारों व आकांक्षाओं को सामूहिक कार्रवाई में लाने में सहयोग करना है।

उनकी यात्रा

जड़ें

रबी बिस्समकटक के खाम्बेसी गाँव से आते हैं और कोंध समुदाय से हैं। वे गाँव के जीवन और सामुदायिक वास्तविकताओं की निकट समझ लेकर आते हैं।

एक युवा का आगे बढ़ना

ऐसे समय में जब गाँवों को युवाओं की भागीदारी और जिम्मेदारी की आवश्यकता है, रबी ने आगे बढ़कर योगदान देने का निर्णय लिया है।

इरादे से कार्रवाई तक

ग्राम एंकर के रूप में उनकी यात्रा अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन उनका इरादा स्पष्ट है: सुनना, भाग लेना, लोगों के साथ मिलकर काम करना और बदलाव की गति बनाने में सहयोग देना।

समुदाय के प्रति प्रतिबद्धता

रबी मानते हैं कि सकारात्मक बदलाव लोगों की भागीदारी और स्थानीय स्वामित्व के माध्यम से उभरना चाहिए। वे इस प्रक्रिया में सीखने, जुड़ने और योगदान देने के लिए तैयार हैं।

सामुदायिक बदलाव के लिए एक युवा आवाज़

रबी की प्रोफ़ाइल लंबे समय की उपलब्धियों की सूची के बजाय उनकी जीवन-आधारित पहचान और प्रतिबद्धता पर केंद्रित है। उनकी सबसे महत्वपूर्ण ताकत आगे बढ़ने, समुदाय से सीखने और उसके भीतर से बदलाव के लिए काम करने की इच्छा है।

वे चैलेंज लैब में क्या लेकर आते हैं

- कोंध समुदाय के एक युवा सदस्य के रूप में स्थानीय जड़ें और जीवन-अनुभव।
- अपने गाँव और समुदाय की स्थिति में सुधार लाने में वास्तविक रुचि।
- लोगों से जुड़ने, सुनने और सामूहिक प्रक्रियाओं में भाग लेने की इच्छा।
- कार्रवाई और अनुभव के माध्यम से स्थानीय युवा नेता के रूप में विकसित होने की प्रेरणा।

“बदलाव तब शुरू होता है जब हम आगे बढ़कर अपने लोगों के साथ काम करने के लिए तैयार होते हैं।”

सांस्कृतिक संवेदनशीलता और साझा समझ

लोग | स्थान | संस्कृति | क्षेत्र भ्रमण परिचय

परंपराओं का सम्मान करें। साथ मिलकर सीखें। मसबूत समुदायों का निर्माण करें।

अलग-अलग लोग, और भी समृद्ध कहानिंयों

लोग
विविथ जीवन, साझी आकांक्षाएँ।

स्थान
अद्वितीय भू-दृश्य, अद्वितीय कहानियाँ।

संस्कृति
परंपराएँ जो हमें जोड़ती हैं।

स्थानीय संस्कृति को समझना विथास, सम्मान और सार्थक परिवर्तन की नींव रखता है।

लोग और परंपराएं

बुजुर्गों के पास बह ज्ञान, मूल्य और परंपराऐं हैं जो समुदाय का मार्गदर्शन करती हैं।

आजीविका और जीवनशैली

दैनिक जीवन प्रकृति, भूमि और स्थानीय परंपराओं से गहरे जुड़े हुए संबंधों को दिखाता हैं।

समुदाय और सामंजस्य

लोग मिलकर काम करते हैं, एक-दूसरे का सहयोग करते हैं और परंपराओं को जीवित रखते हैं।

साझा समझ

एक-दूसरे से सुनना और सीखना एक मसबूत, अधिक समावेशी और उज्जबल भविष्य का निर्माण करता हैं।

सम्मान करें सीखें साथ जुड़ें आगे बढ़ें

हमारी संस्कृति
हमारी ताकत
हमारा साझा कल

ग्रामीण चैलेंज लैब • रायगड़ा

सांस्कृतिक संवेदनशीलता एवं साझा समझ

लोग • स्थान • संस्कृति | क्षेत्रीय अभिमुखीकरण संक्षेप

"जिज्ञासा के साथ आएँ। खुलेपन के साथ सुनें। लोगों से सम्मान के साथ मिलें।"

ग्रामीण चैलेंज लैब विविध पृष्ठभूमियों से आए लोगों को रायगड़ा के समुदायों के साथ सुनने, सीखने और संभावित रास्तों को समझने के लिए एक साथ लाता है। बिस्समकटक में यह सहभागिता गाँवों और ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों की यात्राओं में शामिल है, जहाँ डोंगरिया कोंध सहित आदिवासी समुदाय अपनी भूमि, संस्कृति और परंपराओं के साथ गहरे संबंधों में रहते हैं।

आगंतुकों के लिए यह इतिहास और स्थानीय ज्ञान से समृद्ध जीवन-पद्धतियों को समझने का अवसर है। जिज्ञासा, खुलेपन और सांस्कृतिक संवेदनशीलता से यह अनुभव सभी के लिए सार्थक, सम्मानजनक और गरिमापूर्ण बनता है।

"हम अतिथि के रूप में प्रवेश करते हैं। हम सीखने वालों के रूप में मिलते हैं।"

सहभागिता के लिए मुख्य दिशानिर्देश

1. एक जीवंत समुदाय में प्रवेश

गाँव ही हमारी कक्षा है। यह यात्रा अवसर देती है:

- दैनिक जीवन की परिस्थितियों को समझें और विविध दृष्टिकोण सुनें।
- बुजुर्गों, महिलाओं, युवाओं, किसानों और श्रमिकों से सीखें।
- समुदाय की ताकतों और चुनौतियों—दोनों पर ध्यान दें।
- अंतर को सीखने की समृद्धि का हिस्सा मानें।

2. सहमति की संस्कृति

सहमति फोटोग्राफी, साक्षात्कार, घरों में प्रवेश और प्रथाओं के दस्तावेज़ीकरण—सभी पर लागू होती है।

"क्या मैं आपकी तस्वीर ले सकता/सकती हूँ?"
"क्या आप इसे साझा करने में सहज होंगे?"

3. फोटोग्राफी एवं वीडियोग्राफी

- लोगों की तस्वीर लेने या रिकॉर्ड करने से पहले पूछें।
- लोगों को अपनी सहजता व्यक्त करने के लिए पर्याप्त स्थान दें।
- हर दृश्य में गरिमा और संदर्भ को केंद्र में रखें।
- यह सोशल मीडिया, रील्स, ऑडियो, शोध और संस्थागत प्रकाशनों पर भी लागू होता है।

4. स्थानीय रीति-रिवाजों का अनुभव

- अनजानी प्रथाओं को देखें, पूछें और समझने का प्रयास करें।
- सांस्कृतिक संदर्भ समझने के लिए स्थानीय सहयोगियों पर भरोसा करें।
- ऐसे स्थानों या प्रथाओं का सम्मान करें जिनका महत्व हमें तुरंत दिखाई न दे।

"क्या आप इसके बारे में थोड़ा बता सकते हैं?"

5. वेशभूषा और उपस्थिति

- गाँव की पदयात्राओं और ऊँचे पहाड़ी क्षेत्रों के अनुकूल आरामदायक, सादगीपूर्ण और व्यावहारिक कपड़े पहनें।
- सरल और संयमित उपस्थिति बनाए रखें ताकि ध्यान समुदाय की आवाज़ों और संवाद पर रहे।

6. साझा भोजन: सांस्कृतिक आदान-प्रदान

- साझी मेज़ स्थानीय पारिस्थितिकी और खाद्य परंपराओं को समझने की एक खिड़की है।
- मौसमी, स्वदेशी सामग्री और आतिथ्य को जानें।
- भोजन संबंधी आवश्यकताओं के बारे में आयोजकों को पहले से बताएँ।

7. समुदाय के साथ बातचीत

खुले और जिज्ञासापूर्ण प्रश्नों से शुरुआत करें:

- "यह कैसे बदल रहा है?"
- "यहाँ क्या काम किया है?"

8. आदिवासी ज्ञान

- वन, बीज, बुनाई, उपचार और जल से जुड़े ज्ञान का सम्मान करें।
- स्वीकार करें कि यह ज्ञान जीवन-अनुभव और पहचान से जुड़ा है।

7. समुदाय के साथ बातचीत — आगे

- “समुदाय ने पहले से क्या प्रयास किए हैं?”
- “आपको कौन-सी संभावनाएँ दिखाई देती हैं?”
- गहरे सम्मान और औपचारिक स्वीकृति के साथ सुनें।

8. आदिवासी ज्ञान — आगे

- ज्ञान साझा करने के अधिकार और संदर्भ का सम्मान करें।
- ज्ञान को केवल सूचना नहीं, बल्कि जीवन-अनुभव और पहचान का हिस्सा समझें।

9. बच्चे और युवा

- बातचीत को सहज, आत्मीय और सम्मानपूर्ण रखें।
- फोटोग्राफी और नोट्स के लिए सहमति की सख्त प्रक्रियाओं का पालन करें।
- बच्चों को बिना किसी मंचित गतिविधि के स्वाभाविक रूप से रहने दें।

10. परिदृश्य के साथ संबंध

- पहाड़ियों, धाराओं और जंगलों का संवेदनशीलता के साथ अनुभव करें।
- आसपास की जगह को साफ रखें और प्राकृतिक वातावरण को बिना नुकसान के छोड़ें।
- क्षेत्रीय यात्राओं और भ्रमण के दौरान प्रकृति पर न्यूनतम प्रभाव डालें।

11. संवेदनशील बातचीत

जब अनानास के विपणन, बुनाई, पेयजल, प्रवासन या आजीविका जैसे विषयों पर बात हो, तो समुदाय के सदस्यों को तय करने दें कि क्या, कितना और कब साझा करना है। ध्यान ताकतों, आकांक्षाओं और संभावनाओं पर रखें।

12. सारांश: प्रत्येक आगंतुक के लिए साझा समझ

जिज्ञासु रहें: खुले मन से सीखने की भावना के साथ खोजें।
सुनें: समुदाय के दृष्टिकोण को अपनी समझ को आकार देने दें।
उपस्थित रहें: लोगों और स्थान को पूरा ध्यान दें।
खुले रहें: अनजानी प्रथाओं को सम्मान और सहजता से अपनाएँ।

सम्मान करें: विशिष्ट इतिहास और जीवन-पद्धतियों का सम्मान करें।
साथ सीखें: सामूहिक रूप से संभावित रास्तों को तलाशें।
सहमति लें: दस्तावेज़ीकरण या फोटोग्राफी से पहले हमेशा पूछें।
समझ बनाएँ: अतिथि के रूप में प्रवेश करें, सीखने वालों के रूप में मिलें।

सुनें स्थानीय रूप से • सामूहिक रूप से समझें • मिलकर रास्ते बनाएँ

atmashaktitrust.org

101-A, Friends Colony East, New Delhi - 110065
info@atmashaktitrust.com, atmashaktitrust@gmail.com